बेनिशां
रूहानी ग़ज़लें
योश तुर्वेदी ' बेनिशां'

बेनिशां

रूहानी ग़ज़लें

योश तुर्वेदी 'बेनिशां'

अजल से लेकर आजतक जो न हुई नुमूद

जो कभी कही न सुनी वो दास्तान हो

1. मेरा जैसा कौन यहाँ

मेरा जैसा कौन यहाँ साहिबे तक़दीर है

जिसकी ख़ुद नुमाई की अबस टूट गयी ज़ंजीर है

मुर्शिद जिसके नूर से सारा जहां है पुर रौशन

उसके मुक़ाबले में कौन मौजू और ग़नी दिलगीर है

गफ़ुर्रूल रहीम है वो मददगार सबका है

सादिक़ है और सच्चा है, मोहज्जिब तामीर है

महो खुरशीदो अंजुम हैं, जिसके हैं ज़र्रीं कबा

पारसाई और फय्याजी तो उसकी जागीर है

गुंबदे मीनाई से जो कायम है पैरा नवा

सरबरा बुर्दा वो नैमते उज्मा की तदबीर है

दस्तगीर है वो हम जैसे उफ्तादों का

राजदां ज़ात आली का, सरवरी तस्वीर है

गुमां नहीं मुझको मेरी तक़दीर पर है फिर भी

पुर्सिशो मेहरबानी का तालिब, 'बेनिशां' हकीर है

साहिबे तक़दीर- भाग्यवान, खुदनुमाई- स्व प्रदर्शन, अबस- अचानक, मुर्शिद- गुरू, पुर रौशन- प्रकाशवान, मौजू- उपयुक्त, गनी-धनवान, गफ़ुर्रूल रहीम- कृतार्थ करने वाला, मोहज्जिब- विकसित, तामीर- निर्मित, ज़र्रीं कबा- वस्त्र, फय्याजी - उदारता, गुंबदे मीनाई- आकाशीय गुंबद, पैरा नवा - गीत गाने वाला, सरबरा बुर्दा- आचार्य, तदबीर- तरकीब, दस्तगीर- सहायक, उफ्ताद- हताश, सरवरी- अग्रणी, हकीर-तुच्छ

2. तेरी ज़ात में जब हो गया फ़ना

तेरी ज़ात में जब हो गया फ़ना, तो मुझमें चलता कौन है
तुम्हें धोखा हुआ है मैं नहीं हूँ, जाने मुझमें रहता कौन है

ये रंगे तगय्युर तेरे और नक़्शे कुहन, महशर खिराम है तेरी चाल
कभी तो पीरे मुगां कभी लामकां, ये पैकर बदलता कौन है

हम सब हैं परवर्दा ए तूफ़ाँ, रब्ते बाहमी रखते हैं नहीं
तेरे कुर्ब में रहने को, कश्मकशे दहर से निकलता कौन है

वादा ए फर्दा किया रोज़े अव्वल, दुनिया में आकर गया हूँ भूल
जीते जी मरना है उसको पाना, लेकिन मेरी जां मरता कौन है

ज़ाहिर बातिन नहीं है यकसां, पुरकारियों का है मुतवातिर हुजूम
अश्क़ आमेज हो जाए दिल भर आए, ऐसी बातें कहता कौन है

जब्ते हवास की ताब है नहीं, ख़्वाहिशों से भरा है लबरेज़
दुनियादारी का बोझ है भारी, उसकी गली में जा ठहरता कौन है

एक अजीब सा है ये मुअम्मा, तजल्ली ज़ाती में बका होने पर
जब गुम हो गया हूँ मैं तो फिर, मेरी जगह 'बेनिशां' दिखता कौन है

रंगे तगय्युर- परिवर्तन का रंग, नक़्शे कुहन- पुराने चिन्ह, महशर खिराम- प्रलयकारी चाल, पीरे मुगां- मैकदे का मालिक, लामकां- लापता, पैकर- रूप, परवर्दाए तूफ़ाँ- तूफ़ान के पाले हुए, रब्ते बाहमी- आपसी प्रेम, कश्मकशे दहर- जीवन संघर्ष, वादा ए फर्दा- कल किया हुआ वादा, ज़ाहिर बातिन- बाहर भीतर, यकसां-एकसा, पुरकारियों- चालाकियाँ, मुतवातिर- लगातार, अश्क़ आमेज- आँसू भरी, जब्ते हवास- इंद्रिय निग्रह, मुअम्मा-पहेली, तजल्ली- प्रकाश

3. अगर करना है तरक़्क़ी

अगर करना है तरक़्क़ी, तुझे ऊँची उड़ानों में
तो फ़क़ीर बन कर गुज़ारा उनके आसतानों में

कासा लिए शौक़े दीद का, उनकी गली में घूम आ
वक़्त ज़ाया न कर तू, बेमहल बहानों में

सपने तो सुराब हैं, हाथ कभी आते नहीं
इरादतन लगा दी आग, सपनों के आशियानों में

चोट जाने कब की है, ज़ख़्म की हुई कुरेद
ख़ून रिसता ही रहा, मेरे दिल के निशानों में

तमन्नाए दीद का ख़्वाब, बस इक ख्वाब ही रहा
जाने कब से दे रहा हूँ, आवाज़ें तुम्हें अज़ानों में

मुर्दा हाल चले जा रहा था जाने कब का मैं
जोशे जुनूँ का मर्ज़ उठा दिल के वीरानों में

मेरे जैसा नसीब भी, क्या होगा किसी अगियार का
गर्दूं ने ला के बैठा दिया 'बेनिशां' ऊँचे ठिकानों में

आसतानों- बैठकों , कासा- कटोरा, शौक़े दीद- दर्शन, बेमहल- व्यर्थ, सुराब-मरीचिका, इरादतन-स्वयं की मर्ज़ी से, आशियानों- घोंसलों, तमन्नाए दीद- दर्शन इच्छा, अज़ानों-आवाजों, जोशे जुनूँ-उन्माद, अगियार-शत्रु , गर्दूं - भाग्य

4. जान भी ले ली

जान भी ले ली और कोई कसर नहीं छोड़ी
तेरी सवाबातों ने ये जबीं मुन्तजर नहीं छोड़ी

ढूँढा किया खुदा को मैं, ख़ुद की तलाश में मगर
कोई सुराग़ मिला नहीं, अफसुर्दगी मगर नहीं छोड़ी

फरेबे मशीयत के भुलावे ये, तगैयुरात के दिखावे ये
दिखे कोई ग़ैर मुझे, ऐसी नज़र नहीं छोड़ी

दिलशिकन अदाएँ तेरी और ये तरीक़ा ए तालीम
ख़ुद को पेशे क़दम रखने में, मैंने कसर नहीं छोड़ी

ये मुसलसल इनायतें और इकसुई इबादत मेरी
नफ्स की कशमकशों ने कभी जेरो जबर नहीं छोड़ी

इधर झुकाया सिर मेरा, उधर तज़ल्ली बरसा करी
मेरे होने के अहसास की फिर कोई ख़बर नहीं छोड़ी

अब तो आ जाओ सनम, खड़ा हूं इंतजार में
सूनी आँखें 'बेनिशां' ने चश्मेतर नहीं छोड़ी

सवाबातों- पुण्यों, जबीं- माथा, मुन्तजर- इच्छुक, अफसुर्दगी- उदासी, फरेबे मशीयत- सांसारिक फ़रेब, तगैयुरात- परिवर्तन, दिलशिकन- दिल तोड़ने वाली, मुसलसल- निरंतर, इकसुई- एकाग्र, जेरो जबर- अस्त व्यस्त, तजल्ली- कृपा, चश्मेतर- भीगी आँखें

5. पहुँच नहीं सकती

पहुँच नहीं सकती, फ़रिश्तों की परछाइयाँ वहाँ
जहाँ आशियाँ है मेरा, नहीं है खुदाइयाँ वहाँ

सारी चकाचौंध के परे, सारी सजावट के परे
दम तोड़ देती हैं, हूरो गिलमां की अंगड़ाइयां वहाँ

हैं वो अफसुर्दा मुझसे, फिर भी मुझे यक़ीन है
पलट मेरी तरफ़ देखेंगे, पहुँचेंगी गर रूसवाइयां वहाँ

वो बड़ा रहीम है और वो बड़ा करीम है
माफ़ कर दिए जाते हैं, होती हैं जिनकी सुनवाइयाँ वहाँ

बारातें तो लौट गईं, दूल्हा दूल्हन का हुआ मिलन
यार से जब वस्ल हो गया, क्या करेंगी शहनाइयां वहाँ

सनम आशना मैं हुआ, क़दमो पा तक पहुँच गया
रूबरू यार है मेरे, मौकूफ है आशनाइयां वहाँ

खलाओं के बाद भी, कोई एक जगह है जहाँ
मैं नहीं तू नहीं सिर्फ़ हैं, 'बेनिशां' तनहाइयां वहाँ

फ़रिश्तों-देवदूतों, आशियाँ- घोंसला, खुदाइयाँ- ईश्वरत्व, हूरो गिलमां- जन्नत की हूरें, अफसुर्दा- नाराज़, रूसवाइयां- नाराज़गी, वस्ल- मिलन, सनम आशना- प्रेमिल, क़दमो पा- चरणों में, रूबरू- सम्मुख, मौकूफ- उचित, आशनाइयां- प्रेम साम्राज्य, खलाओं -शून्यों

6. मिलने के बाद फिर भी

मिलने के बाद फिर भी, हूँ क्यूँ बेक़रार मैं

सीना फिगार मैं, और गम गुसार मैं

मसरूर था फरेबे बेकरां में क्यों रात दिन

तुमसे जो मुलाक़ात हुई, हुआ बेक़रार मैं

चश्मे तर लिए हुए, सोजे गम की सही तपन

तुम्हारी फुर्कते कोहे गम का हूँ राज़दार मैं

कल्बे मुज्तर से फसुर्दा बारहा था मैं रहा

बकरम तेरा दुनिया में, न रहा गिरफ़्तार मैं

तेरे शोला रू पर हुआ था मैं जाँनिसार

गमे फर्दा से बेख़बर, सीना फिगार मैं

सरगुजिश्ती क्या बताऊँ, नफ्सानी चोट से हो बिस्मिल

किसी तरह बच ही गया, न हुआ गुनहगार मैं

इख़्तियार में नही बका, पहले मौत के मुझे

मरता हूँ रोज़ रोज़ 'बेनिशां' इंतज़ार में

सीना फिगार- क्षत सीना वाला, गम गुसार- गम बाँटनेवाला, बेकरां- असीम, फुर्कते-कोहे गम- जुदाई के गम का पहाड़ , शोला रू - चमकदार चेहरा, जाँनिसार- कुर्बान ,गमे फर्दा- भविष्य का गम, कल्बे मुज्तर- व्याकुल दिल, फसुर्दा- उदास, बारहा- अक्सर, सरगुजिश्ती- आपबीती, नफ्सानी चोट से बिस्मिल- मन के भुलावे से घायल, इख़्तियार- बस में , बका - पूर्ण विलय

7. धीरे धीरे तेरी याद में

धीरे धीरे तेरी याद में, फ़ना हुए ख्यालात सब
ये फुसूं निगाह ये दर्से जुनूँ हैं कमालात सब

जाने कितने सवालों को था मुझे उनसे पूछना
वो बज्म में ज्यों आए कहाँ गए सवालात सब

कूचा ए यार में जल्वागिरी भी आम थी
तेरे हुस्न पे निसार हुए, करते रहे मुलाक़ात सब

मैं तो चुप ही बैठा था, नफ्स मुँह जोरी करता रहा
तिरछी नज़र से जो देखा, दी निकाल ख़ुराफ़ात सब

पहुँच कर उसके वतन में, पुर सुकूं हासिल हुआ
ये कश्मकशे दहर, ये कुलफते राह हैं जंजालात सब

जाने कैसे उचटती हुई, पड़ गई मुझ पर नज़र
जज़्बात सब पूरे हुए और फ़ना हुए मलालात सब

अब हाल ये है मेरा, इस्तगना का दौर है
मौत दिल हो गए हैं, 'बेनिशां' हालात सब

फुसूं निगाह- जादुई निगाह, दर्से जुनूँ - उन्मादी शिक्षा, बज्म- महफ़िल, कूचा ए यार - यार की गली, जल्वागिरी- दर्शन, निसार- कुर्बान, नफ्स- मन, पुर सुकूं- पूर्ण चैन, कश्मकशे दहर- जीवन संघर्ष, कुलफते राह- राह के कष्ट, जज़्बात- इच्छाएँ, मलालात - दुःख , इस्तगना- स्थितप्रज्ञ, मौत दिल - स्थिर मन

8. जमाले मुर्शिदी का असर है

जमाले मुर्शिदी का असर है, वर्ना मैं तो ख़ाक था
सरे पा तक अज़ाब था, बस एक मुश्ते राख था

उसकी बज्म में वल्लाह क्या गज़ब का फ़ैज़ था
कैसी वो तुगियानी थी, कैसा वो सैलाब था

सकते का था आलम, होशो खिरद की चुप थी लगी
चारों तरफ़ थी चाँदनी, मुन्नवर महताब था

ये ही तो मौक़ा था, जब पेश करूँ सिर को मेरे
सिरकशी के लिए दिल मेरा बेताब था

हर तरफ़ हू की थी गूँज, जुल्जलाल तो आम था
दिल में फैली थी रौशनी, याद का आफ़ताब था

तरक़्क़ी के ये पैमाने, काम वहाँ करते नहीं
जितना नाकाम हुआ दुनिया में, उतना ही कामयाब था

सारे ख़्वाब पूरे हुए, बस एक मसला बाक़ी रहा
बका उल बका होने का, 'बेनिशां' बाक़ी ख़्वाब था

जमाले मुर्शिदी- गुरू कृपा, सरे पा - सिर से पाँव तक , अजाब- कष्ट, मुश्ते राख- मुट्ठी भर राख, फ़ैज़- पूर्ण प्रकाश, तुग़ियानी सैलाब - बाढ़, होशो खिरद- मन बुद्धि, मुन्नवर- प्रकाशमान, महताब- चाँद, सिरकशी- सिर कटाना, हू-ऊँ अनहद, जुल्जलाल- पूर्ण प्रकाश, आफ़ताब- सूर्य, पैमाने- तराज़ू , बका उल बका-पूर्ण विलय

9. सारे इसियां निसियां माफ़ हुए

सारे इसियां निसियां माफ़ हुए, ख़ुशगवार हो गया
इंबिसात जो मिला, दीवानावार हो गया

कुलफते राह ख़त्म हुए, तस्कीने दिल हुई अयां
उसकी खुशखुल्की जो देखी, एतबार हो गया

दानिशवरी मिल गई, एतकाद भी पैदा हुआ
दिले सदचाक हो गया और दरकिनार हो गया

अक़्ल सलीम जो हुई, नश्वोनुमाई मिल गई
अश्कबार हो गया और तार-तार हो गया

आके समा गए मुझमें ख़ुद, मेरा वजूद मिट गया
ख्वाहमख्वाह उनका मुझे क्यों इंतज़ार हो गया

ऐसी निगाहें नाज से, देखा मुझे था एक रोज़
मुकल्लिद उनका हो गया और वफ़ादार हो गया

रूह उरूज करती गई, फ़ासले सब ख़त्म हुए
ज्यों ज्यों तुगियानी बढ़ी, 'बेनिशां' बेक़रार हो गया

इसियां निसियां - सुकर्म कुकर्म, इंबिसात - आनंद, कुलफते राह- राह के कष्ट, तस्कीने दिल- दिल की शांति, खुशखुल्की- सुन्दर व्यवहार, दानिशवरी- बुद्धिमत्ता ,एतकाद-श्रद्धा, दिले सदचाक- दिल के सौ टुकड़े , नश्वोनमाई- नया रूप, अश्कबार-आँसू भरा, वजूद- मौजूदगी , ख्वाहमख्वाह- चाहे बिना चाहे, मुकल्लिद- अनुगामी, उरूज- ऊँचाई ,तुगियानी- बाढ़

10. भूल जाऊँ तेरे इश्क में

भूल जाऊँ तेरे इश्क में, मैं दुनिया और दीन को
बुलन्दी कर दी अता, मुझसे कमतरीन को

कश्मकशों के झगड़ों से मैं, जूझता ही रहा
इल्लाह अभी भरोसा है, मुझे मेरे यक़ीन को

और कोई नहीं है बस, सिर्फ़ वसीला है तेरा
कायनाते जहान को और सब दहरे तिलस्मीन को

बेवजह मजाजी सुराबों में भटकता चला गया
क्या होगा हासिल मुझ ज़माने के तमाशबीन को

जिस भी घर को खोजा वो ही, निकला बस तेरा ही घर
नहीं लेकिन कोई घर इस जहां में मुझसे मकीन को

नफ्सानी ख़्वाहिशों की हर वक़्त, खाता ही रहा था चोट
कैसे मिले मंज़िलत मेरे दिले नुक़्ताचीन को

तेरे क़दम पा मिल गए और सब अज़ाब मिट गए
पुर मुसर्रत मिल गई 'बेनिशां' मुतमईन को

दीन-ईश्वर, कमतरीन-क्षुद्र, कश्मकशों- संघर्षों, वसीला- साथ, कायनाते जहान- विश्व, दहरे तिलस्मीन- जादुई संसार, मजाजी- दुनियावी, सुराबों- मृग मरीचिकाओं, मकीन-रहनेवाला, नफ्सानी-मन की, मंज़िलत- प्रशंसा, नुक़्ताचीन- छिद्रान्वेष्ण, अज़ाब- कष्ट, पुर मुसर्रत-पूर्ण संतोष, मुतमईन- संतुष्ट

11. नूरे वहदत से मेरा हो

नूरे वहदत से दिल मेरा हो, पुर मुनव्वर रोज़ रोज़
बेख़बर हर रोज़ रोज़, चश्मेतर हर रोज रोज

इस कश्मकशे दहर में, सिर्फ़ एक ही वसीला है तू
या खुदारा करूँ ज़ियारत, तेरे घर हर रोज़ रोज़

राहे तलब में ये मेरा, कारवाँ क्यों कर रूके
तेरी ढूँढ में मेरा हो फेरा, हर शहर हर रोज़ रोज़

ज़िन्दगी जीने का तरीक़ा, मुर्शिदे कामिल ने दिया
मुर्दा दिल हो कर रहूँ, पर जिऊँ मगर हर रोज़ रोज़

बिना अब इक दूसरे के, कुछ सोचना भी मुहाल है
हर घड़ी तेरा साथ रहे ओ हमसफ़र हर रोज़ रोज़

सिर्फ़ चेहरे पे ही मेरे, साया ए जमाल काफ़ी नहीं
अन्दर तक उतर जाए मेरे, उसका असर हर रोज़ रोज़

खुशखुल्क तू कर दे मुझे, हमाओस्त तो कर दे तू मुझे
वहदत का नक्शा हो 'बेनिशां', कारगर हर रोज़ रोज़

नूरे वहदत- ईश्वर प्रकाश, पुर मुनव्वर- पूर्ण प्रकाशित, चश्मेतर- आँसू भरी, कश्मकशे दहर- जीवन संघर्ष, वसीला-केन्द्र या साथ, ज़ियारत - परिक्रमा ,राहे तलब- ईश्वरीय राह, मुर्शिद कामिल- पूर्ण गुरू, साया ए जमाल- सौन्दर्य की छाया, खुशखुल्क- सुन्दर व्यवहार, हमाओस्त- अहं ब्रह्म

12. उसकी निगाहें नाज़ से

उसकी निगाहें नाज़ से बस लहुलुहान हो
मरने को हो ज़मीं, जीने को आस्मान हो

निस्बती नुक़्ते निगाह जिसके पास हो
क्या मज़ा हो जब राजदां मेरा पासबां हो

अजल से लेकर आज तक जो न हुई नुमूद
जो कभी कही न सुनी वो दास्तान हो

दीवानगाने इश्क़ और ये दर्से जुनूं
दस्तगीर हो वो मुझसे शादमां हो

बदरजे गायते तकमील हो गई मिसाल
जोड़ दे टूटे दिलों को ऐसी ज़ुबान हो

वल्लाह ये तेरी पुर्सिशो मेहरबानियाँ
हफ्त आसमां चीर दे कुछ ऐसी उड़ान हो

सिर चाक कराने की मुझमें तमीज़ हो
मुर्शिद के मक़तल में 'बेनिशां' इम्तिहान हो

निगाहें नाज़ - प्रेम भरी निगाह, निस्बती नुक़्ते निगाह - सापेक्षिक निगाह, पासबां - रक्षक, अजल - सृष्टि प्रारम्भ, नुमूद - प्रकट, दास्तान - कहानी, दीवानगाने इश्क - प्रेम पथिक, दर्से जुनूं - उन्माद शिक्षा , शादमां - प्रसन्न, बदरजे गायत - अति उच्च, तकमील - पूर्णता, पुर्सिशो मेहरबानियाँ - आदर सत्कार, हफ्त आसमां - सातों आसमान, सिर चाक - सिर कटवाना, मुरशिद - गुरू, मक़तल - क़त्लगाह

13. हुस्नो इश्क के वलवले थे

हुस्नो इश्क के वलवले थे, क्यों सँभल गए
जाने कितने मजमुआत उस पल में पल गए

ए दिले मुज्तरी मेरी हालत न मुझसे पूछ
तमन्ना लिए दीद की, अब क़दम निकल गए

इत्तबाह कामिल का मैं, करता यूँ रहा
अरमान मचल गए, सब अजाब ढल गए

ये कुव्वते कश्फी और ये नामुरादियां
अरमान जितने उठे एक एक करके ढल गए

चश्मे इल्तिफात से जब हुआ मैं दो चार
बेमहल इरादे थे वो यों ही पिघल गए

मब्दए फ़ैयाज़ यूँ खुलता चला गया
सारे जहाँ की नियामतें मिलीं और बहल गए

मुतहम्मिल होता गया और ताब़ यूँ बढ़ी
सफ़र ज्यों ज्यों तै हुआ 'बेनिशां' बदल गए

वलवले- प्रभाव, मजमुआत- संग्रह, मुज्तरी- व्याकुलता, दीद-दर्शन, इत्तबाह कामिल का - पूर्ण का अनुगमन, अजाब- कष्ट, कुव्वते कश्फी- आकर्षण शक्ति, चश्मे इल्तिफात- कृपा दृष्टि, बेमहल- व्यर्थ, मब्दए फ़ैयाज़- भंडार, मुतहम्मिल- सहनीय, ताब़ - सहन शक्ति

14. ख़्वाहिशे शोहरत गर हुई

ख़्वाहिशे शोहरत गर हुई, कोरा बना के छोड़ेगी

मत भाग पीछे फ़रेब के, ये कज़ा पर ला के छोड़ेगी

बेवजह हुबाबों के जो पीछे भागता रहा

ये बेपनाह मुज्तरिबी धूल उड़ा के छोड़ेगी

मक्रो फ़रेब है ये सब हुजूमे शौक़

इशरते रफ्ता की चाह, धता बता के छोड़ेगी

ख़्वाबे अदम है ठहरना नफ्सो शैतां का

बुलहवस आँधी है ये, नींद उड़ा के छोड़ेगी

चारा ए हरमां तो होता कभी नहीं

नफ्सानी ख़्वाहिशें शौक़ बुझा के छोड़ेगी

तसलसुल करता रह, हर वक़्त उसकी याद

तदव्वुरता उसकी ज़ात में ले जा के छोड़ेगी

तू रहनवर्दे इबादत है, उस राहे अदम का

'बेनिशां' सुराबों की गलबाई रूला के छोड़ेगी

हुबाबों- बुलबुले, मुज्तरिबी-व्याकुलता , हुजूमे शौक़- इच्छाएं , इशरते रफ्ता- अतीत का सुखभोग, ख़्वाबे अदम- अंतहीन सपना, चारा ए हरमां- तकलीफ़ों का अन्त, तसलसुल- अनुक्रम से, तदव्वुरता- दूरदर्शिता, रहनवर्द- पथिक, राहे अदम- अन्तहीन पथ, सुराब - मृग मरीचिका, गलबाई- प्रबलता

15. या मौला हिजाबे तन से

या मौला हिजाबे तन से मुझे तू पाक साफ़ कर दे
मेरे बद एमालों को तू फय्याजी से माफ़ कर दे

दर दर हूँ मैं भटकता, बस तेरी है मुझको ढूँढ
सब अजाबों से तू मुझे, बस कामयाब कर दे

मेरा होना ही वजह है, सारी मुश्किलों का मेरे
मेरे होने की हक़ीक़त को, तू बेकस्द ख़्वाब कर दे

यारब हूँ मैं प्यासा, तेरे रहम की इक बून्द का
तेरे फज्लो रहम को बस तुगियानी सैलाब कर दे

खला मेरा है आसमां, वही है मेरी जौलागाह
तायरे लाहूती मुझे बना दे, शिगुफ्ता आफ़ताब कर दे

लेता नहीं मैं कभी, गिन गिन के जब तेरा नाम
बेमहल क्या रखना हिसाब, तू करम बेहिसाब कर दे

अब क्यों करता है देर, जान लबों तक गई है आ
पर्दा ए हस्ती चाक कर, 'बेनिशां' को बेनक़ाब कर दे

हिजाबे तन- अस्तित्व, पाक साफ़- पवित्र, बद एमालों- कुकर्म, फय्याजी-दयालुता, अजाबों- कष्ट, बेकस्द- बेमतलब, यारब-ईश्वर, तुगियानी-बाढ़ , खला- शून्य, जौलागाह-भ्रमण स्थल, तायरे लाहूती- शून्य का पक्षी, शिगुफ्ता- खिला हुआ, बेमहल- व्यर्थ, पर्दा ए हस्ती चाक- अहं का पूर्ण विलय

16. इधर लूँ मैं नाम तेरा

इधर लूँ मैं नाम तेरा, उधर हुज़ूरी हो जाए

तसव्वुरे शैख़ करते हुए, मुतवातिर नूरी हो जाए

इतना तो करना ही पड़ेगा, दीदे शौक़ की तलब है तो

हर आन वाहिद के लिए इखलाक ज़रूरी हो जाए

बस तेरे दर से एक यही इल्तिज़ा है मेरी

दुनिया मेरी नूरी हो जाए और हक़ ज़हूरी हो जाए

याखुदा क्या मज़ा हो, गर ऐसा ये हाल हो

तेरे जलवों से तेरे करमों से, हर शख़्स महसूरी हो जाए

बताना तो आम बात है, छुपाना ही है ख़ास बात

जो जितनी उरूज करता जाए, वो उतना मस्तूरी हो जाए

राहे तलब के फ़क़ीरों को, बस ये उसूल आम हो

हर जुर्रते रिंदाना के लिए, तेरी मन्जूरी हो जाए

सब कुछ तो तूने दिया, बस एक छोटी सी अर्ज़ है

तुझमें मिल जाने की मंशा, 'बेनिशां' पूरी हो जाए

तसव्वुर शैख़ - गुरू ध्यान, मुतवातिर- लगातार, दीदे शौक़- ईश्वर दर्शन, तलब- इच्छा, हर आन वाहिद- प्रत्येक, इखलाक- व्यवहार, इल्तिज़ा- प्रार्थना, हक़ ज़हूरी- ईश्वर प्रकट, महसूरी- घिरा हुआ, उरूज- उत्थान, मस्तूरी- छुपा हुआ, जुर्रते रिंदाना- प्रेम पूर्ण साहस, मंशा- इच्छा

17. हासिल हो जाए

हासिल हो जाए पुल और महशर में साथ पीरों का
तेरे कदमों पा में रहने का हक़ है, हम से हकीरों का

सारी कायनात तो तेरे होने की मिसाल है
महो खुरशीदो अंजुम नाम हैं, तेरे ज़ख़ीरों का

जब तू करीम है, तेरी रहमत की नहीं मिसाल
ख़ामियाज़ा भुगतना पड़ेगा क्या तालिब को तकसीरों का

ये तेरा दिल मुझपे आना और ये फैजान की बारिश हुई
ये तेरी निगाहे करम और ये टूटना जंजीरों का

मत भूल मजाज़ी दौलतें हैं नहीं किसी काम की
रोज़े महशर जब हिसाब होगा, क्या होगा जागीरों का

और तो कुछ मेरे पास नहीं, बस यही तोशा हकीर सा
अल्लाह के दस्तगीरों का, रौशन अफ़रोज़ हीरों का

हर वक़्त संजीदगी क्या, कुछ चुहलबाजी भी तो हो
तेरी बज्म में ज़रूरी है रहना, 'बेनिशां' से दिलगीरों का

पुल- सिरात का पुल, महशर- प्रलय, हकीर-तुच्छ, कायनात- सृष्टि, महो खुरशीदो अंजुम- चाँद,सूर्य,तारे, ज़ख़ीरों- ख़ज़ानों, ख़ामियाज़ा-दंड, तालिब- जिज्ञासु, तकसीरों- गल्तियों, फैजान- कृपा, मजाज़ी- दुनियावी, तोशा - पाथेय, संजीदगी- शांत स्वभाव, बज्म- महफ़िल, दिलगीरों- दिल लगाने वाले

18. या इलाही दे मुझे

या इलाही दे मुझे, कुल्लेदाइन बलाओं से निज़ात
जाने अंजाने किए गए, सब गुनाहों से निज़ात

नफ्सानी हवाएँ हैं ये, ख़्वाहिशों और हवस की
दे मुझे इन बेगुदाज़, तेज़ हवाओं से निज़ात

ता उम्र पीछा किया, गर्दिशे रोज़गार का
क्यों न हो नमोतबर, उन सदाओं से निज़ात

गर्दिशें अय्याम में, अब तो मुझको दे ही दे
पुरकारियों से भरी, उन अदाओं से निज़ात

जब तेरा मजीदे करम है और तेरी अताएं बेमिसाल
मिले सब खताओं से निज़ात और सब सजाओं से निज़ात

नफ्सो शैतां के जोर को, कर दे तू तो नेस्तनाबूद
दुनिया में जो खींच लें, दे उन निगाहों से निज़ात

और आख़िर में यारब, ये भी तू तो कर दे करम
बुताने सितमगर की 'बेनिशां' सब वफाओं से निज़ात

कुल्लेदाइन बलाओं- कष्ट विपत्तियों, निज़ात - मुक्ति, नफ्सानी-मन सम्बन्धी, हवस- इच्छाएँ, बेगुदाज़- अप्रभावकारी, ता उम्र- पूरी आयु, गर्दिशें रोज़गार- संसार चक्र, नमोतबर- अविश्वसनीय, गर्दिशें अय्याम- काल चक्र, पुरकारियों- चालाकियाँ, मजीद- महान, नेस्तनाबूद- बंद, यारब- ईश्वर, बुताने सितमगर- कठोर प्रियतम

19. हक़ीक़त किसी मज़हब की

हक़ीक़त किसी मज़हब की, मोहताज नहीं है

ये वो मुअम्मा है जिसका कोई, राज नहीं है

दुनिया ये क़ायम है नफ्सो शैतां के बावजूद

खेल है हकीकी का, ये मजाज़ नहीं है

खला में जो गुम हो गया, मासियत से निकल गया

तायरे लाहूती को कोई आवाज़ नहीं है

हद के बाद आता है फिर बेहद का दायरा

उस बेहद से परे फिर कोई परवाज नहीं है

तै होते गए फ़ासले, गुज़र गए सब मरहले

कहाँ ले जाएगा इश्क ये, अंदाज नहीं है

फज्लो करम से ये दिल मेरा, अब मौतदिल हुआ

खैरोशर में अब कोई, इम्तियाज़ नहीं है

कहीं भी पहुँच जाए और कितना भी आगे पहुंच जाए

अस्ल बात ये है कि 'बेनिशां', सरफराज नहीं है

मुअम्मा- पहेली, नफ्सो शैतां- मन माया, हकीकी-सत्, मजाज- दुनियावी, खला-शून्य, मासियत- अज्ञान, तायरे लाहूती- शून्य का पक्षी, परवाज- उड़ान, मरहले- स्थान, खैरोशर- अच्छाई बुराई

20. या खुदा दूर कर

या खुदा दूर कर ताअस्सुबी ख़्यालों से मुझे
इलाही पुर नूर कर दे अपने उजालों से मुझे

कभी न हो मुझे जवाब देने में परेशानियाँ
जो कभी ख़त्म न हो, उन सवालों से मुझे

धोखा है फ़रेब है ये नफ्स ए मुस्तआर है
दूर ही रख बस इन दिलकश जंजालों से मुझे

मेरे बस की बात नहीं अब तू ही तो कुछ कर ज़रा
शर्मसार कर दे मुझे अब बदएमालों से मुझे

आसूदा मैं हो जाऊँ गर, तू क्यों न दे मुझे निजात
इन जंजालों से मुझे और इन बवालों से मुझे

इश्क की आतिश से तू, कर दे मेरा सीना राख़
जला दे मेरा गमे हिज्रां, अपनी मशालों से मुझे

अपनी गोद में तू जगह दे, दे पनाह अपने कुर्ब में
किनारा करके ले जा 'बेनिशां', इन एहवालों से मुझे

ताअसुब्बी- मज़हबी, पुर नूर- पूर्ण प्रकाशित, नफ्स ए मुस्तआर- अपूर्ण मनस्, बदएमालों-कुकर्म, आसूदा- संतुष्ट, निजात- मुक्ति, बवाल- कष्ट, आतिश- आग, गमे हिज्रां- विछोह का दुख, पनाह- शरण, कुर्ब - सामीप्य, एहवालों- स्थितियाँ

21. ताअते हक़ छोड़ के

ताअते हक़ छोड़ के दुनिया में पाता क्या है
रूहानी दौलत छोड़, कौड़ियों को हाथ फैलाता क्या है

बेखुद तूने किया, पर मैं होशियार भी तो हूँ
दिखाऊँ बेख़ुदी में होशियारी, तो तेरा जाता क्या है

निकल नहीं सकता मैं तेरे, नेशए इश्क के परे
रहूँगा तेरे जमाल कुर्ब में, मुझे तू समझाता क्या है

निस्बती नुक़्ते निगाह रखकर, मैं ख़ुद से पूछा किया
अंदर गिलाजत रखके, बाहर शान दिखाता क्या है

ज़रा सी झूठी शान और इस जवाल दुनिया के वास्ते
मब्दये फ़ैयाज़ की नेमतें फिर ठुकराता क्या है

बाहर दिखाता है ख़ुशी, अंदर दिल रेज़ा रेज़ा
झूठी तबस्सुम को तेरे चेहरे पे सजाता क्या है

हवासे रफ्ता हो गया अब जिदंगी मुस्तआर में
दिल के दाग़ों को और 'बेनिशां' फिर छुपाता क्या है

ताअते हक़- पूजा का स्वभाव, रूहानी दौलत- आध्यात्मिक धन, बेखुद- बेहोश, होशियार- सतर्क, नेशए इश्क- प्रेम का डंक, जमाल- सौन्दर्य, कुर्ब- सामीप्य, निस्बती नुक़्ते निगाह- सापेक्षिक नज़र, गिलाजत- गंदगी, मब्दये फ़ैयाज़- भंडार, नेमतें- पुरस्कार, तबस्सुम- मुस्कुराहट, हवासे रफ्ता- खोए हुए होश हवास, ज़िन्दगी मुस्तआर- उधार की ज़िन्दगी

22. बुलहवस चश्मकों से

बुलहवस चश्मकों से दिल दरकिनार हो

जहां जल्वा हो तेरा वहीं फस्ले बहार हो

बेवजह है ये सारी दिल की मश्शातगी

दुनियाँ के दर्दो दुख से दिल सरशार हो

फ़िक्रे मदफन में तू कर अपनी तलाश

बेक़रार हो और क्यों न बेइख्तियार हो

दिल की मुज्तरिबी का न पूछो हाल ये

वो पास और नज़दीक हों और इंतजार हो

गर्दिशे अय्याम में शिकस्ता यूँ हुआ

बुताने सितमगर का भला क्यों राज़दार हो

मोहज्जिब होके राहे तलब में चल पड़ा

गुले गुलज़ार क्यों न हो पैहम बेशुमार हो

मआले आशिक़ी मिलाए बेपनाह हुस्न

तालीफ कल्बी ऐसी मिले कि 'बेनिशां' बेक़रार हो

बुलहवस- हवस की गुलामी , चश्मकों- भ्रम, मश्शातगी- श्रृंगार, सरशार- प्रकट, फ़िक्रें मदफन- फ़िक्र समाधि की, बेइख्तियार- अनियंत्रित, मुज्तरिबी- व्याकुलता, गर्दिशे अय्याम- संसार चक्र, शिकस्ता- टूटन, बुताने सितमगर- कठोर प्रियतम , मोहज्जिब होकर- विकसित होकर, राहे तलब- ईश्वर की राह, मआले आशिक़ी- प्रेम का परिणाम, तालीफ कल्बी- प्रेमी हृदय

23. फक्रो फ़ना की दौलतें

फक्रो फ़ना की दौलतें, मिलती नहीं आसान से
सादिक़ मुरीद बनेगा, जब वो उतरेंगी आस्मान से

अजसरे नौ नेमतें उज्मा मिलती चली गईं
निगाहे क़हर कैफ़ियत है उसकी पहचान से

बदएतकादियों का यहाँ कोई गुज़र नहीं
ख़ुश खल्क उक्ता परस्त दिखे पड़ते हैं वीरान से

राहे तलब में मैं, नाकरदार क्यूँ कर हुआ
अंदोह और दर्द न पूछो मुझ नाकाम से

मुश्किल है अहसासे जियां और इजाज़ात
नकूश खुर्दा ए पा क्यों, छोड़ गया निशान से

रज्मे ख़ैरो शर और मेरा नापाएदार कल्ब
मताए ग़मो राहत की नुमूद मेहरबान से

इदराक भी नहीं है और न ही है कोई इल्म
साबित क़दम बने रहना, 'बेनिशां' के हैं पयाम से

फक्रो फ़ना- लयता व वैराग्य, सादिक़ मुरीद- सत् शिष्य, अजसरे नौ नेमतें उज्मा- फिर से कृपाएँ , निगाहे क़हर- प्रकोप निगाह, कैफ़ियत - आनंद, बदएतकादियों- कुभाव, ख़ुश खल्क- सुखी, उक्ता परस्त- मतलबी, नाकरदार- अनुभवहीन, अंदोह और दर्द- दुख व पीड़ा, इजाज़ात-कृपा, अहसासे जियां- लुटने का अहसास, नकूश खुर्दा ए पा - पदचिन्हो से परिचित, रज्मे ख़ैरो शर- लड़ाई अच्छाई बुराई की, नापाएदार- नश्वर, मताए ग़मों राहत- गम व ख़ुशी, नुमूद- उत्पत्ति , इदराक- बुद्धि, साबित क़दम- दृढ़ ,स्थिर , पयाम - संदेश

24. नज़र बर क़दम

नज़र बर क़दम जो भी उठाए जाता हूँ
दीवार ए तअस्सुब मुसलसल गिराए जाता हूँ

बचकर तवाहमात से निकल ही आता हूँ मैं
तेरी दाइमी नकहत जहां में फैलाए जाता हूँ

कुर्बते पैहम में ख़ुद को मैंने रंग डाला
दिले मुज्तर को अबस चमकाए जाता हूँ

शम्सो कमर आते हैं रहमत की ख़बर देने को तेरी
आलमे बिसीत में ख़ुद को महकाए जाता हूँ

दिले नाकरदाकार को पुरकारियों की समझ नहीं
ये ख़्याल सोच कर अक्सर घबराए जाता हूँ

इधर उम्रे गुरेजा दराज़ होती जाती है
दिले हजीं को लिए उकताए चला जाता हूँ

ये नकहत की लज्जत, ये दाइमी तसद्दुक
सरफराज जान के 'बेनिशां' सजाए जाता हूँ

तअस्सुब- विद्वेष, मुसलसल- लगातार, तवाहमात- भ्रम, दाइमी- स्थायी, नकहत- ख़ुशबू , कुर्बते पैहम- निरंतर सामीप्य, दिले मुज्तर- व्याकुल दिल, अबस- बिना बस के , शम्सो कमर - चाँद सूरज, आलमे बिसीत- विशाल ब्रह्माण्ड, दिले नाकरदाकार- अनुभवहीन ह्रदय, पुरकारियों- चालाकियों, उम्रे गुरेजां- धोखेबाज़ उम्र, दराज़- लम्बी, दिले हजीं - दुखित दिल, दाइमी- स्थाई, तसद्दुक- कृपा, सरफराज- उच्च

25. मैं नहीं हूँ ज़रूर

मैं नहीं हूँ ज़रूर कोई बहुरूपिया है ये
समा गया मेरे वज़ूद में कोई क़ुदसिया है ये

अब मैं तो हूँ नहीं, उसका ही तो अक्स है
महे कामिल है ये कोई, शोख़ शबाबिया है ये

नज्जारा ए अफलाकी है और है एजाज़ ए असलाफी
अंदाज़े करम लाजवाल इसका, बेहिसाबिया है ये

मैं नहीं हूँ मैं तो यहां, किसी का हूँ मैं आइना
निस्बती नुक़्ते निगाह और ख़त जवाबिया है ये

वो मुझमें बोलता है, मैं तो हूँ ही नहीं कहीं
अजीब नज्जारा है हकीकी और मजाज़िया है ये

मेरा वजूद तो है नहीं, जो कोई भी है मुझमें
मौतदिल हालत में है ये, रहनवर्दिया है ये

हूँ खला में गुम और हूँ मैं मस्तूरे अना
इर्फाने मुहब्बत है ये 'बेनिशां', इंकलाबिया है ये

क़ुदसिया - फ़रिश्ता, अक्स- छाया, महे कामिल-पूर्ण चन्द्र, शोख़ शबाबिया- चंचल यौवन, नज्जारा ए अफलाकी- आकाश दृश्य, एजाज़ ए असलाफी- बुज़ुर्गों की कृपा, लाजवाल- अमर, निस्बती नुक़्ते निगाह- सापेक्षिक नज़र, वजूद- होने का भान, मौतदिल- स्थितप्रज्ञ, रहनवर्दिया- पथिक, खला- शून्य, मस्तूर- छुपा हुआ

26. राहे सुलूक मे मेरे क़दम

राहे सुलूक में मेरे क़दम, देखो कहाँ तक पहुँचे
जहाँ वो जल्वानुमा है, ज़रूर वहाँ तक पहुँचे

मेरे बस की बात नहीं कि तेरे क़दम पा भी छू लूँ
शाकिर हूँ, मैं तेरे ख़्याल, मेरी जुबां तक पहुँचे

बस ले के जुबां पर तेरा नाम, मैं तो चल पड़ा
जुनूँ लिए हुए मेरे सोजे दरूं, तेरे आस्मां तक पहुँचे

तौहीद की मय उँडेल दी, तूने कल्ब में मेरे
सीना ब सीना खेल के बाद, फिर लफ़्ज़ बयां तक पहुँचे

सिर देने का हौसला भी उसकी देन थी
सिर चाक करने उसके तेग़, मेरी गिरेबां तक पहुँचे

अब तो मैं हूँ नहीं, हर जगह वही है जल्वागर
उसको खोजते खोजते तअम्मुल, आखिर दास्तां तक पहुँचे

अब तो ये हो गया हाल, तेरी रहनुमाई में
सूरत देखनी हो जिसको तेरी, वो 'बेनिशां' तक पहुँचे

राहे सुलूक- ईश्वर की राह, जल्वानुमा- ईश्वर तत्व, क़दम पा- चरण, शाकिर- आभारी, जोशे जुनूँ- प्रेम उमंग, सोजे दरूं- अंदर की आग, तौहीद-एक ईश्वरवाद, कल्ब- ह्रदय, लफ़्ज़ -शब्द, तेग़-तलवार, गिरेबां- गर्दन, जल्वागर- ईश्वर, तअम्मुल- विचार, दास्तां- कहानी, रहनुमाई - पथ प्रदर्शन

27. अपनी हरकतों पर

अपनी हरकतों पर मालिक, मैं बेहद शर्मिन्दा हूँ
पामाल हूँ, तबाह हूँ, बिस्मिल परिन्दा हूँ

हूँ पशेमां नहीं आया, अपनी हरकतों से भी बाज़
ताज्जुब है फिर भी, क्यों कर के मैं ज़िन्दा हूँ

जा के खड़ा हो गया मैं सूली ए अकदस पर तेरी
जुद कुश्तन के लिए मैं तालिबाने फन्दा हूँ

असलियत मेरी अब तो है सब तेरे सामने
लाफ हूँ, बकवास हूँ, बेसूद चिन्दा चिन्दा हूँ

नक़ली हूँ, झूठा हूँ, जुर्रते इसियां की कसक ये
शौके जां फिशां हूँ नहीं, बेमहल साजिन्दा हूँ

बुल हवस हूँ, नमोतबर हूँ, ज़िन्दगी मुस्तआर को लिए
ग़ामजन हूँ, खेल रहा हूँ, उफ्तादा हूँ, दरिन्दा हूँ

जैसा भी हूँ बेनिशां मैं, हूँ तो बस ही तेरा
मुकाफात का हूँ तालिब नहीं, 'बेनिशां' यास कारिन्दा हूँ

पामाल- समाप्त, बिस्मिल- घायल, परिन्दा- पक्षी, पशेमां - शर्मिन्दा , अकदस-पवित्र, जुद कुश्तन- शीघ्र मरण, तालिब- इच्छुक, लाफ- ढोंगी, बेसूद-व्यर्थ, जुर्रते इसियां-पाप का साहस, शौके जां फिशां- मेहनतकश, बेमहल- व्यर्थ , बुल हवस - हवस का गुलाम, नमोतबर - अविश्वसनीय, ज़िन्दगी मुस्तआर - उधार की जिंदगी, ग़ामजन हूँ - चल रहा हूँ, उफ्तादा - बेकार , मुकाफात - सजा, यास - निराश

28. जला दे मेरा आशियाँ

जला दे मेरा आशियाँ मेरे अजाबों को न पूछ
मेरे ख़्वाबों को न पूछ, मेरे सवाबों को न पूछ

करम कर दे उन सभी पर, जो हैं क़तार में खड़े
गुम हो जाएं तेरी ज़ात में, उन आफ़ताबों को न पूछ

सूरत से भी है ऊँचा दर्जा, मिलता है सीरत को यहाँ
ख़ुशबू को पूछ ज़्यादा, भले ही गुलाबों को न पूछ

उरियां हो गए जो सामने तेरे, हिजाब सारे हैं खुल गए
दिल को पूछ जिगर को पूछ, तू नकाबों को न पूछ

इंसाफ मुझे नहीं चाहिए, दरकार है रहम की तेरे
जिनको मैं चाहता हूँ भुलाना, तू उन हिसाबों को न पूछ

ज्यों ज्यों मैं पहुँचता गया, उनकी बज्म में उनके क़रीब
दिल में जो उठते रहे, उन तुगियानी सैलाबों को न पूछ

अब तेरे पास है फ़ैसला मेरा, उतार दे या मुझे तू मार दे
मेरे सवालों को तू देख, 'बेनिशां' जवाबों को न पूछ

आशियां-घौसला, अजाब-कष्ट, सवाब- पुण्य, करम- कृपा, ज़ात- ईश्वरत्व, आफ़ताब- सूर्य, सूरत- शक्ल, सीरत- गुण, उरियां- नग्न, हिजाब- पर्दे, दरकार- प्रार्थना, बज्म- महफ़िल, तुगियानी व सैलाब - बाढ़

29. वो इबादत है कैसी

वो इबादत है कैसी जिसमें कोई निशां बाक़ी रहे
न तश्ना रहे न दरूं रहे, न तश्नाकाम बाक़ी रहे

होऊँ खला में आश्कार, मिट जाए सब मेरा निशाँ
तुझमें गुम हो जाऊँ मैं बस, तेरा नाम बाक़ी रहे

तर्क कर दूँ मैं ये दुनिया, कौनेन खुदा और तर्क
तेरे कुर्ब में हर वक़्त, मेरा क़याम बाक़ी रहे

जब तक जिऊँ मैं तो उसका, आइना बन कर रहूँ
बका होऊँ उसकी ज़ात में, बस ये पैग़ाम बाक़ी रहे

तेरा अक्स मुझमें मिले, खोजने वालों को तेरे
मैं कहीं बचूँ नहीं, बस फैजान तेरा बाक़ी रहे

मुझमें आकर जगह ले ले, मुझे अपनी दुनिया में दे भेज
वजूद तमाम मिटता जाए पयाम नहीं बाक़ी रहे

बाक़ी रहने को तो बस, एक ही चीज़ बाक़ी रही
तेरी चौखट पर मेरा 'बेनिशां' एक सलाम बाक़ी रहे

इबादत-पूजा, निशां- चिन्ह, तश्ना- प्यास, दरूं- आग, तश्नाकाम- प्यासा, खला- शून्य, आश्कार- प्रकट, तर्क- त्याग, कौनैन- परलोक, क़याम- स्थिति, बका- पूर्ण लय, जात- ईश्वरत्व, पैग़ाम- संदेश, अक्स- छाया, फैजान- कृपा, वजूद- होना, पयाम- संदेश

30. ए मेरे दिले आशना

ए मेरे दिले आशना क्या कमाल है बेख़ुदी
जाते हक़ में फनाइयत की मिसाल है बेख़ुदी

जिसे मिली बेख़ुदी की चाशनी, वो और स्वाद भूल गया
जला दे जो दिल के द्राग, वो मशाल है बेख़ुदी

होश वाले हैं असल में नींद में, बेखुद ही जागे हुए
दुनिया की तलबगारी पर, बड़ा सवाल है बेख़ुदी

बेख़ुदी वो पुल है जो, ले जाए वतन को तेरे
दौनो जहां के बीच का, एतदाल है बेख़ुदी

वो ही उतरा पार जो, बहरे बेख़ुदी में गया डूब
ख़ुद को भूल जाने का, एहवाल है बेख़ुदी

बेख़ुदी के भी अलग अलग, रंग हैं और परतें भी हैं
जलाल है बेख़ुदी और जमाल भी है बेख़ुदी

यार की महफ़िल में पहुँचाती, बेख़ुदी है मौतदिल
मुझ से पूछो तो कहूँ 'बेनिशां', बस लाजवाल है बेख़ुदी

आशना- प्रेमिल, फनाइयत- लयता, तलबगारी- इच्छाएँ, एतदाल- संतुलन, बहर- समुद्र, एहवाल- परिस्थिति, जलाल- आग, जमाल- शीतलता, मौतदिल- स्थितप्रज्ञ, लाजवाल- अमरता

31. शैतान से इन्सान बनाया

शैतान से इन्सान बनाया फिर रहमान बना दिया
तेरी आला तवज्जह ने मुझे, जाविदान बना दिया

महरमे असरार बना दिया, अश्कबार बना दिया
अपनी ज़ाते हक का मुझे, कामिल मुक़ाम बना दिया

जिंदीक और पिंदार था, ज़िन्दगी मेरी पलट दी
अपना नाम अता किया, मुझे गुमनाम बना दिया

अपनी उकवा में मुझे, तूने कामयाब कर दिया
एक तरह से दुनिया के लिए, नाकाम बना दिया

रंगे तगय्युर ने मुझे, कुछ ऐसा जा कर रंगा
मुकामे हैरत में ले जा, मुझको हैरान बना दिया

मुझ जैसे खस्तातन को, परवाज़ कर दी अता
अपना कायनात के राज़ों का, राज़दान बना दिया

मुझ मुज्तरिब को शराबे शौक़ में डुबो दिया
प्यास मेरी बढ़ा दी 'बेनिशां', तश्नाकाम बना दिया

रहमान- कृपालु, तवज्जह - कृपा, जाविदान-अमर, महरमे असरार- रहस्य मर्मज्ञ, अश्कबार- अश्रुपूर्ण, कामिल मुक़ाम- पूर्ण स्थान, जिंदीक और पिंदार- नास्तिक और घमंडी, उकवा-परलोक, रंगे तगय्युर- परिवर्तन के रंग, हैरत- आश्चर्य, खस्तातन- पीड़ित, मुज्तरिब- व्याकुल ,शराबे शौक - ईश्वरीय मय, तश्नाकाम - प्यासा

32. हुज़ूर देखिए तो इधर

हुज़ूर देखिए तो इधर, बड़ी इनायत होगी

क़तरे को दरिया करदो, तो बड़ी अज्मत होगी

तल्खिए हयात में तुम्हारी ये इनायतें

इन्हें बरक़रार रखिए जनाब, बड़ी मसर्रत होगी

तेरे तसद्दुक के निसार, तेरे करम का अहतराम

तेरे पर्दे में छुपे पयम्बर की बरकत होगी

ये मेरी कमजर्फियां और ये नामुरादियां

रहूँ निगेहबानी में तेरी, हुज़ूर बड़ी आफियत होगी

माना ये तग़ाफ़ुल तेरा और मेरी कुलफते राह

तुम्हें छोड़ किसी का रुख देखूँ, तो बड़ी वहशत होगी

ग़मज़दा न होऊँ फ़ितरत में, होऊँ तारीकियों से भी दूर

पस्तीए हिम्मत गर जो होऊँ, तो बड़ी मुसीबत होगी

तेरी किबरियाई के निसार, तेरी दस्तगीरी के निसार

हमेशा पुर रौशन बने रहिए, वर्ना 'बेनिशां' जुल्मत होगी

इनायत- कृपा, क़तरे- बूँदे , दरिया- समुद्र, अज्मत- महानता, तल्खिए हयात- जीवन कष्ट, मसर्रत-संतोष, तसद्दुक- कृपा, अहतराम- शुक्र, पयम्बर- संदेशवाहक, कमजर्फियां- धारण करने की कमी, नामुरादियां-असफलता, आफियत-कृपा, तग़ाफ़ुल- उपेक्षा, कुलफते राह- राह के कष्ट, वहशत- संशय, किबरियाई-बुज़ुर्गी ,दस्तगीरी- मददगारी, पुर रौशन- पूर्ण प्रकाशित, जुल्मत- अँधेरा

33. कैसे मेरे करम

कैसे मेरे करम फिर भी तेरा करम, ये ग़ज़ब निज़ाम है
हज़ार सजदे हैं मेरे तुम पर और तेरे दर पे मेरा सलाम है

किसी किसी को ही मिलता है, दाख़िला तेरी जौलागाह में
तेरे कूचे में जाकर रहना, मेरा आखिरी मुक़ाम है

तेरा क़ुर्ब उसे हुआ अता, जिसने खुदी को भी दे दिया
सिर मेरा पेश मक़तल में तेरे, मेरा अब तो यही पयाम है

नहीं चाहिए दुनिया में कोई पूछ, मुझे गुमशुदगी तो कर दे अता
धीरे धीरे खलाओं में बेनिशां, जाने कहाँ हो गया गुमनाम है

बहुत मुश्किल है इस दुनिया में, दीदारे तड़प पैदा हो जाना
अर्ज़ मुज्तरी पेश करने में भी, बेनिशां तू नाकाम है

इनामों का क्या है करना सब यहीं पर धरे रह जाएँगे
मेरा निशां भी नहीं बचे कहीं, यही असली इनाम है

हम तो हैं मंगते किसी तरह, उनसे करम की भीख मिले
गुलाम दर गुलाम हो 'बेनिशां', इस फ़क़ीर की यही पहचान है

मेरे करम- मेरे कर्म, तेरा कर्म- तेरी कृपा, निज़ाम- राज्य, सजदे- प्रणाम, जौलागाह- भ्रमण स्थली, कूचा- गली, मक़तल- क़त्लगाह, गुमशुदगी- लापता होना, खला- शून्य, मुज्तरी- व्याकुलता, नाकाम- असफल

34. जला दे वजूद मेरा

जला दे वजूद मेरा और मेरी ख़ाक भी उड़ाता जा
बस तुझ तक पहुँचने का रास्ता मुझे बताता जा

न की इबादत न रखे रोज़े न ज़िक्रो फ़िक्र में हुआ मशगूल
मेरे बदएमालों को तू अपनी कमली में छुपाता जा

जो भी किया अक्सर ग़लत, न ही शेवा ए तस्लीम था
गल्तियां जो मुझसे हुईं माबूद, बरहम तू उनको भुलाता जा

आंसू ही है पुख़्ता रास्ता, जानां के आस्ताने को
'बेनिशां' तू अपनी पलकों पर, अश्क के तारों को सजाता जा

बनकर तू उसका फ़क़ीर, कर खिदमत बुज़ुर्गाने दीन की
अपना नाम तू गुलामों की, फ़ेहरिस्त में लिखाता जा

तड़पे उसकी ही याद में, हर वक़्त हर दिन सुबहोशाम
गमे हिजां की दरूं को रोज, अपने अश्कों से बुझाता जा

हो जा तू मौतदिल रहनवर्द, हो के इस्तगनाई में मकीं
अपने कंधे पे अपनी मैयत, हर रोज 'बेनिशां' उठाता जा

वजूद- जीवन का होना, ख़ाक- राख, रोज़े -व्रत, ज़िक्रो फ़िक्र- जप ध्यान, बदएमालों- कुकर्म, कमली-कम्बल, शेवा ए तस्लीम- पूजा का स्वभाव, माबूद- प्रियतम, अश्क़- आँसू, जानां के आस्ताने- प्रियतम का द्वार, बुज़ुर्गाने दीन-वंश के पूर्व पुरूष, फ़ेहरिस्त- सूची, गमे हिज्रां- विछोह, दरूं - आग, मौतदिल-स्थितप्रज्ञ, इस्तगनाई-जीवन मुक्त, मकीं- स्थित, मैयत-अर्थी

35. तू नहीं मैं नहीं

तू नहीं मैं नहीं, ऐसी बेख़ुदी मुबारक बार बार

तेरी चौखट पर जो घिसा करे, मेरी जबीं मुबारक बार बार

जो उठे इबादत में तेरे लिए, दुआ और फातहा के लिए

दस्ते करम मुबारक बार बार, आस्तीं मुबारक बार बार

कुल्जमे इश्क निकल पड़े, फुगां तो बेइख्तियार था

हज़ारों शरर फूटते रहें, दिले हजीं मुबारक बार बार

हाय तेरी निगाहें नाज़, हज़ारों शाकिर उस तीर पे

दिल जिसने घायल कर दिया, वो दिलनशीं मुबारक बार बार

यों तो सारा ही जहां है, तेरी जौलागाह में

जहां तेरे मुबारक क़दम पड़े, वो ज़मीं मुबारक बार बार

पास में रख अगियारों को अपने, वो ही तेरे अहबाब हैं

जो ताअते हक़ की तरफ़ ले जाएं, ऐसे नुक्ताचीं मुबारक बार बार

मेरी खाल के जूते बना कर उनके पैरों में दे पहना

जो तेरी ओर ले जाएं, ऐसे हमनशीं मुबारक बार बार

ज़बीं - माथा , इबादत- पूजा, दुआ और फातहा- प्रार्थना, दस्ते करम- कृपा हस्त, कुल्जमे इश्क-प्रेम की नदी, फुगां- रुदन, शरर- झरने, शाकिर- धन्यवाद, दिलनशीं- प्रियतम, जौलागाह-भ्रमण स्थली, अगियारों-शत्रुओं, अहबाब- मित्र, ताअते हक़- पूजा, नुक्ताचीं- गल्तियां निकालने वाले

36. बन गया सूरत किसी की

बन गया सूरत किसी की, गोया मैं हूँ नहीं
किसी का मैं हूँ आईना, कहीं गया मैं हूँ नहीं

तैयार हूँ फनाइयत के लिए, अब मुझे है इन्तज़ार
जल रही हैं सोज़े दरूं, अभी बुझा मैं हूँ नहीं

मिल गया हूँ उसमें मैं, मुझमें बोलता कोई ग़ैर है
फ़ना हूँ तेरी ज़ात में, नक़्शे पा भी हूँ नहीं

मुश्किल है करना बखान, खला के इस मुक़ाम का
लाहूती हूँ मैं, अना हूँ मैं, खला के सिवा मैं हूँ नहीं

फ़र्क़ दिखता नहीं अब, कहीं कोई दूसरा तो है नहीं
मिल गया हूँ सबमें ही मैं, गोया जुदा मैं हूँ नहीं

कोई नहीं हैं ये ख़्वाहिश, कि वो 'बेनिशां' कौन था
कहीं निशान नहीं रहे मेरा, कहीं पर मैं हूँ नहीं

कैसे करूँ बयान इस मुकाम का, जब होशोखिरद बचा नहीं
बका हो गया हूँ कहीं 'बेनिशां', रहा मैं कहीं हूँ नहीं

आइना-दर्पण, फनाइयत- लयता, सोज़ दरूं- अंदर की आग, नक़्शे पा- पैरों के निशान, खला-शून्य, लाहूती-शून्य, अना-शून्य, होशोखिरद- जाग्रत अवस्था व ज्ञान, बका- पूर्ण लयता

37. जौरे चर्ख से बचा दिया

जौरे चर्ख से बचा दिया, फ़ैज़ नातमाम था
मरहमे राज होता गया और कुर्ब में क़याम था

नेमते उज्मा से मुझे, हमाओस्त कर दिया
गैब से रोज़ी मिली, यही मेरा इनाम था

बहुत ऊँचे थे मरहले, जो तेरी नैमत से मिले
इसमें मेरा कुछ नहीं, असल तेरा फैजान था

दीदारे हक़ की मैं, इस्तिलाह कैसे करूँ
बड़ी शदीद खलिश थी, बड़ा पुरअसर कलाम था

बाज़ आया कभी नहीं, क्यों तू मुझसे खेलते
ओ बद्अहद मुझे तेरा नाचार सलाम था

मेरी बहबूदी के लिए, फ़ैसला इक था यही
शौके जां फिशां ज़िंदा रहे, उसका यही पैग़ाम था

आखिरश में उसका क्यों क़ादिर होता चला गया
फरमापिजीर फ़रमावदार वो 'बेनिशां' गुलाम था

जौरे चर्ख- अत्याचार भाग्य का, मरहमे राज- राज का जानकार, कुर्ब- सामीप्य, नेमतें उज्मा-कृपा, हमाओस्त- अहंब्रह्म, गैब- ईश्वरीय, इस्तिलाह- परिभाषा, शदीद खलिश- गहरी चोट, बद्अहद- वादा न निभानेवाला, नाचार- विवश ,बहबूदी- कल्याण, शौके जां फिशां- कड़ी मेहनत की चाह, क़ादिर- क़ाबू में, फरमापिजीर फ़रमावदार- आज्ञाकारी

38. मेरा होना बाखुदा

मेरा होना बाखुदा असल में कोई कमाल नहीं
मैं जब नहीं होऊँगा तब भी कोई मलाल नहीं

नफ्सकुशी ही है रास्ता इस जुलजुलाल का
जब्ते हवास के बिना, कोई शै हलाल नहीं

चश्मे बीना चाहिए, जल्वा देखने को तेरा
क्या आला सिफ़त है तेरी, जिसकी कोई मिसाल नहीं

गफुर्रूल रहीम है वो, वो लाजवाल है
मजाके अहसास पैदा करना, मियाँ बवाल नहीं

तजल्ली जाती का सुरूर, तौबा, तौबा अरे तौबा
जान की बाज़ी है ये, कोई जी का जंजाल नहीं

तेरी तस्वीर में हूँ मैं, अभी क़ैद हूँ सब तरह
तुझसे मुँह को मोड़ लूँ, ऐसे तो एहवाल नहीं

सरायत कर गई है मुझमें, सनम तेरी पाक ज़ात
ताअते हक़ जाए छूट, 'बेनिशां' कोई सवाल नहीं

नफ्सकुशी- इंद्रिय दमन, जुलजुलाल- परम प्रकाशमान, जब्ते हवास- इंद्रिय दमन, चश्मे बीना- देखनेवाली आँख, गफुर्रूल रहीम- कृतार्थ करनेवाला, लाजवाल- अमर, मजाके अहसास- अनुभव रसिकता, तजल्ली जाती- ईश्वर प्रकाश, तस्खीर - संमोहन , एहवाल-परिस्थिति, सरायत- घुस जाना, ताअते हक़- ईश्वर आराधना

39. तीरे वहदत से मजरूह

तीरे वहदत से मजरूह करके, बना लिया हमसाया मुझे
पस्तिए हिम्मत जब भी हुआ, आग़ोश में ला छुपाया मुझे

इर्फाने मुहब्बत करी अता, दूर किया कश्मकशे दहर
आख़िरी ये दाँव है, इसे ख़ूब समझाया मुझे

मब्दए फ़ैयाज़ से हर आन वाहिद की तरह
जैसा पहुँचा किया क़ुबूल, कभी न ठुकराया मुझे

ये मेरी उफतादगी और ये तनुजल्ली मेरी
मेरी मुँहजोर ख़्वाहिशों ने, हर जगह हराया मुझे

आसूदा मैं हुआ, जब पहुँचा उसकी ताब़ में
तल्खिए हयात दिले हजीं ने बताया मुझे

मैं तो था खाकनशीं, मौद्दिब और दिले ग़मी
जगमगा दिया मुझे और ख़ूब महकाया मुझे

ये तेरी अजब ख़ैरख्वाही और ये करमे मज़ीद
अख़्तरे सहर की तरह, 'बेनिशां' है सजाया मुझे

वहदत- एक ईश्वरीयता, मजरूह- घायल, पस्तिए हिम्मत- साहसहीन , इर्फाने मुहब्बत- प्रेम की पहचान, कश्मकशे दहर- जीवन संघर्ष , मब्दए फ़ैयाज़- भंडार, आन वाहिद- प्रत्येक, उफतादगी- दुर्बलता, तनुजल्ली- अवनति, आसूदा- संतुष्ट, ताब़- नियंत्रण, तल्खिए हयात- जीवन कटुता, दिले हजीं - दुखित मन, खाकनशीं- धूल में पड़ा हुआ, मौद्दिब- विनीत, ख़ैरख्वाही- विशेष देखरेख, करमे मजीद- महान कृपा, अख़्तरे सहर- भोर का तारा

40. न वादा है किसी से

न वादा है किसी से और न कोई दावा है

तेरे यादों के नसीम ने मेरे दिल को महकाया है

तर्क कर दे सब सवालात, ले उस कामिल की पनाह

ये अफ़रोज़ चलन एक फ़क़ीर ने बताया है

जला दिया सब कूड़ा करकट, साफ़ किया दिल को मेरे

दिल में तेरी अब अज्मत की नैमत को बसाया है

दिल के हुजरे में बेवजह, बहुत तो थी भीड़ भाड़

जाने कब कब की गिलाजतों को, तेरे नूर से जलाया है

अक़्ल सलीम मिल गई, दिमाग़ साफ़ हो गया

रज्मे ख़ैरो शर में मैंने, फरेबे कज़ा को हराया है

आँसुओं की राह से पाने का तुझे, ये ज़रिया है ख़ास

अश्कों के तारों को अपनी, पलकों पे सजाया है

धीरे धीरे राहे तलब में, सब नुकूश मिटते गए

कहीं जिसका निशां है नहीं, उस 'बेनिशां' को मिटाया है

नसीम- प्रात:वायु, तर्क- छोड़ दे, कामिल-पूर्ण पुरूष, पनाह- शरण, अफ़रोज़- रौशन, अज्मत- महानता, नैमत- नियामत, हुजरे-बैठक, गिलाजतों-गन्दगी, रज्मे ख़ैरो शर - लड़ाई अच्छाई बुराई की, फरेबे कज़ा- मृत्यु भय, अश्कों- आँसुओं, राहे तलब- ईश्वरीय राह, नुकूश- चिन्ह

41. हफ्त आसमां की जौलागाह

हफ्त आसमां की जौलागाह के लिए दे दी परवाज मुझे
कुर्ब अपना किया अता, और खोल दिए राज़ मुझे

अपने करमे मज़ीद से, दी मुझे ऊँची उड़ान
बक्शी इतनी नियामतें, न किया कभी उदास मुझे

जबसे चखा है नशा तेरे क़दमों पा में जा बैठ
लज्जतें दुनिया की न अब आएँगी, कभी रास मुझे

पहले अपनी तवज्जह से करी गिलाजत साफ़ फिर
गहरा नशा उसने चखाया रख लिया अपने पास मुझे

मरहमे असरार मुझे बनाया, खोल दिए गर्दूं के राज़
ख़ुद को मैं ज़ाहिर न कर दूँ, पहना दी नक़ाब मुझे

सौ सौ मुक़ाम कराए तै अपनी नज़रे कमाल से
इतनी तेज़ी से तै किए, कर दिया बदहवास मुझे

ख़ुद को उसकी कायनात में ढूँढता फिरता हूँ मैं
बात इतनी है 'बेनिशां' करवा दी मेराज़ मुझे

हफ्त आसमां- सात आसमां, जौलागाह- भ्रमण स्थली, परवाज़ - उड़ान, कुर्ब- सामीप्य, करमे मजीद- महान कृपा, लज्जतें- इच्छाएँ ,तवज्जह- कृपा, गिलाजत- गन्दगी, मरहमे असरार- रहस्य मर्मज्ञ, गर्दूं - आसमान, मुक़ाम - स्थान, कायनात- सृष्टि, मेराज- मिलन

42. ये तो अच्छा हुआ

ये तो अच्छा हुआ, कहा सुना न गया
निहां रहा तेरा राज, ज़माने में अयां न हुआ

ये मेरी आतिशे शौक़, मिलने की तड़प ये
दहकता रहा ता उम्र, मुझसे बुझा न गया

रोज़े अव्वल मेरी जिदंगी थी, उन्हीं की थी
मुझसे बिछुड़ने का दर्द, उनसे जिया न गया

जल्वा फरोज वो हुए, यकायक बज्म में
सब तेरे क़दम निसार हुए किसी से रहा न गया

दास्ताने हिज्रां मेरी, दर्द कश्मकशे दहर मेरा
मुझसे कहा न गया, उनसे भी सुना न गया

उलफत की शर्त थी, खुदी को सुपुर्द कीजियो
वो माँगते फिरते थे सिर, किसी से दिया न गया

क्या बताऊँ उससे बिछुड़ कर, भटका कहाँ कहाँ पे मैं
दास्ताने अलम मुज्तरिब 'बेनिशां' लिखा न गया

निहां- छुपा, अयां- प्रकट, आतिशे शौक़- प्रेमाग्नि, रोज़े अव्वल- सृष्टि के आरंभ में, जल्वा फरोज - प्रकट, बज्म - महफ़िल, क़दम निसार - पैरों मैं गिरे , दास्ताने- कहानी, हिज्रां - विछोह, कश्मकशे दहर- जीवन संघर्ष, उलफत - प्रेम , खुदी - अहं, अलम- विछोह , मुस्तरिब- व्याकुलता

43. शाद रख दारैन में

शाद रख दारैन में, ऊँची उड़ान होती रहे

उनकी पुर्सिशो मिज़ाजी, बस निगेहबान होती रहे

अहवाले दिल कैसे सुनाऊँ, क्या मुज्तरिबी है मेरी

क़याम हो आसमान में, उनसे पहचान होती रहे,

बहुत हूँ क्यूँ कर भटकता, कश्मकशे दुनिया में मैं

मेरी मज़ाजी ख़्वाहिशें सब नाकाम होती रहे

कबसे हूँ प्यासा कि मैं, इक क़तरा मेहर के लिए

कुल्जमे इश्क मुझ पर, मेहरबान होती रहे

खुलते गए सब राजे हक़, ज्यों ज्यों उरूज होती गई

जितना उसका राज जानूं, बन्द ज़ुबान होती रहे

ख़ुद को ही पाता हूँ मैं, बवजह जल्वों का तेरे

उसके जल्वे देख देख, अबस मुस्कान होती रहे

एक मुश्किल ही बची है, हुबाब ए मैं बाक़ी रहा

बस आख़िरी पर्दा ए खुदी, 'बेनिशां' क़ुरबान होती रहे

शाद-प्रसन्न, दारैन- उच्च लोकों में, पुर्सिशो मिज़ाजी- ख़ैरख्वाही, निगेहबान- दृष्टिगत, अहवाले दिल- ह्रदय कथा, मुज्तरिबी- व्याकुलता, क़याम- स्थान, कश्मकशे- संघर्ष, मज़ाजी- दुनियावी, क़तरा मेहर- कृपा बून्द, कुल्जमे इश्क- प्रेम की नदी, राजे हक़- ईश्वरीय रहस्य, उरूज- उठान, हुबाबे मैं - बुलबुला अहम् का

44. बक्श दी सब दौलतें

बक्श दी सब दौलतें, सजाया अपनी नज़रों में

मैं तो इस क़ाबिल नहीं था, उठाया अपनी नज़रों में

न करी इबादत न रक्खे रोज़े, इक नाकाबिल के लिए

मेरे शौके दीद की ख़्वाहिश को, बचाया अपनी नज़रों में

मैं तो करता ही रहा, कितनी बेअदबियां मगर

भूलों और बदइखलाकियों को, भुलाया अपनी नज़रों में

मश्शाकी से दूर था, उम्रे गुरेज़ां पूरी हुई

उसके रूदादे अन्दाज़े करम, चुराये अपनी नज़रों में

पुरकारियों की फुजूं थी, चूं चरा करता रहा

दौनो जहां के जल्वों को, समाया अपनी नज़रों में

आख़िर उनका हुआ हबीब, हलावत पैदा हो गई

सारे ख़जाना ए गैबों को पाया उनकी नज़रों में

इल्ला इल्ला माशा अल्लाह, उनकी ये खुशखल्कियां

मुझ जैसे हकीर को 'बेनिशां', छुपाया अपनी नज़रों में

शौके दीद- ईश्वर दर्शन, ख़्वाहिश- इच्छा, बदइखलाकियों- दुर्व्यवहार, मश्शाकी- अभ्यास, उम्रे गुरेज़ा- आयु, रूदादो-वृतान्त, पुरकारियों- चालाकियाँ, फुजूं- अधिकता, चूं चरा- तर्क, हबीब- प्रिय, हलावत- मिठास, ख़जाना ए गैब- ईश्वरीय सम्पत्तियाँ, खुशखल्कियां- सुन्दर व्यवहार, हकीर- तुच्छ

45. तेरे क़दमों में रख के सिर

तेरे क़दमों में रख के सिर, दास्ताँ सुना दी सब
रात भर रोता रहा, परेशानियाँ भुला दीं सब

मैं तो था पिन्दारे जिंदीक, मुझ पर ऐसी मेहर करी
मुझ जैसे नातुवां की, बिगड़ी बात बना दी सब

मताए ग़मो राहत मिली, चैन हासिल हो गया
नैमो उज्मा बड़े नाज़ से, दिल में सजा दी सब

ख़्वाब में ले जा के मुझे, मंज़िलें तै करवाते रहे
कलाम उन्होंने किया और इबारत दिल में लिखा दी सब

मुकाफात से बरी किया, साबित क़दम मुझे कर दिया
मुझ मुतलाशी की बेवकूफ़ियाँ, पर्दे में छुपा दीं सब

ज़िंदा जादू है उनकी तवज्जह में मुसलसल
जो बातें कहीं वो कर के भी बता दीं सब

हस्बे जर्फ को छोड़ के मुझको पिला दी बेशुमार
अकीदा पैदा किया 'बेनिशां', और रोशनी दिखा दी सब

पिन्दार- घमण्डी, जिंदीक- नास्तिक, नातुवां- अशक्त, मताए ग़मों राहत- पूँजी ख़ुशी की, नैमो उज्मा- बड़ी नियामत, कलाम- बचत, इबारत- लेख, मुकाफात- सज़ा, साबित क़दम - दृढ़ ,मुतलाशी- जिज्ञासु, तवज्जह- कृपा, मुसलसल- निरंतर, हस्बे जर्फ- पात्रानुसार, अकीदा- भक्ति

46. सारे जहां की कोशिशें

सारे जहां की कोशिशें लगा दीं तुम्हें मनाने को
सितह आलम के वादे सब क्या मुझे ही हैं निभाने को

पहले गिलाजत साफ़ की दिल के आवगीन की
उजालों से भर रहा हूँ, हयातो जीस्त के पैमाने को

ख़ाली सुबूं अब भर चुका, ख़ामोश अब हो गया
पुर नूर हो गया अब, रहा नहीं कुछ बताने को

पहले तो था ठीक ठाक, था अपनी रौ में मस्त
बात ही बात में क्या हो गया, ज़माने को

दिल का हुजरा साफ़ किया, और जगह ख़ाली करी
तज्जली ज़ाती दौड़ पड़ी, मेरे दिल में समाने को

मैं तुम्हारा दोस्त हूँ, कोई अगियार तो हूं नहीं
हरीफाना अन्दाज़ से, देखो न इस दीवाने को

याद तो तकलीफ़ है, भूलना तो इनाम है
ख़्याल फ़ना हो गए 'बेनिशां' सब कुछ भुलाने को

सितह आलम- विश्व तल, गिलाजत- गन्दगी, आवगीन- बर्तन, हयातो जीस्त- जीवन, सुबूं- घड़ा, हुजरा- बैठक, तज्जली ज़ाती- ईश प्रकाश, अगियार- शत्रु , हरीफाना- प्रतिद्वन्दी

47. जुहद तकवा और इबादत

जुहद तकवा और इबादत के भी परे निकल गया
तावानी वाहिद हुई और साँचे में ढल गया

महबे ख़्याले यार जो हुआ तो बच गया
कुलफते राह इतने पड़े, दीवाना दिल सम्भल गया

साकिनाने चर्ख नहीं मैं, उश्शाक भी नहीं
मेरी जुनूँ अंगेज़ी बातें सुन, अगियार भी पिघल गया

ज़िन्दगी मुस्तआर थी मेरी, अहसासे जियां बकमाल
होशो खिरद से निकल गया, तेरे रंग में सँवर गया

आहे फलको फुगन, मैं तो करता ही रहा
नातवानियां करने वाला मैं, एकदम बदल गया

कितना भी हूँ उफ्तादा, पर असल हूँ फ़रमा पिज़ीर
दीवानगाने के फितने देख, दिल बहल गया

साबित क़दम रहूँ मैं, तेरी राहे रास्त का
उसके जमाल के अहतराम में, 'बेनिशां' मचल गया

जुहद तकवा- तप इन्द्रिय निग्रह, तावानी- दीप्ति, वाहिद- उतरी, कुलफते राह- राह के कष्ट, साकिनाने चर्ख- आकाश निवासी, उश्शाक- आशिक, जुनूँ अंगेज़ी- पागलपन भरी, अगियार- शत्रु , मुस्तआर- उधार, अहसासे जियां -लुटने का अहसास, होशों खिरद- ज्ञान, फलक फुगन- आकाशीय क्रंदन, नातवानियां- गल्तियां, उफ्तादा- बेकार, फ़रमा पिजीर- आज्ञापालक, जमाल-कृपा, अहतराम- सम्मान

48. ज़िन्दा है इक फ़क़ीर

ज़िन्दा है इक फ़क़ीर अन्दर इसी ज़मीन के
ज़ाहिर हुआ अब चार सू, बतुफैल करीम के

तू ये जान बका के बाद, नहीं है किसी की मौत
नफ्सानी अन्दाज़ छोड़ दे, ये मामले हैं यक़ीन के

रौशन आसमानों में इक, तालिब से किया सवाल
क्या तुम भी ज़ेरे साया हो उसी हसीन के

उसकी महफ़िल मैं मेरा दखल बस यूं हुआ
हम होते चले गए रूजू मानिंद तमाशबीन के

उसकी तलाश में नफ्सो खिरद के मकानात ढह गए
जब मकां ही न बचा, क्या हक़ होंगे मकीन के

जबसे छोड़ दिया मैंने देखना नफ्सानी खुर्दबीन से
पुर मुसर्रत फैल गई दिल में, मुझ नुक़्ताचीन के

लुटता चला गया मैं और संवरता भी चला गया
इतना फ़ना हुआ 'बेनिशां', पुर्ज़े मिले, आस्तीन के

ज़ाहिर-प्रकट, चार सू- चारों तरफ़, बतुफैल करीम- ईश्वर कृपा से, बका- मोक्ष, नफ्सानी- मानसिक, रौशन- प्रकाशित, तालिब-जिज्ञासु, ज़ेरे साया- भक्त, रूजू- प्रवृत, मानिंद- तरह, नफ्सो खिरद- मन बुद्धि , मकीन- मकान में रहने वाला, खुर्दबीन- यंत्र, पुर मुसर्रत- पूर्ण शान्ति, पुर्ज़े- टुकड़े

49. इस आसी पुरम आसी के

इस आसी पुरम आसी के ऐब छुपाए रखते हैं
तवज्जह देके ज़ाते मुतलक की, होशो हवास उड़ाए रखते हैं

हमने तो कोई कसर छोड़ी नहीं, बेअदबियों के बाद भी
इज़्ज़त बनाए रखते हैं , दीवाना बनाए रखते हैं

खलाओं के गलियारे में मैं चलता ही चला गया
दीवानगी में वो होशियारी को, मौकूफ बताए रखते हैं

दिल के दाग़ों को गलाकर के निकलना है सही बज़ा
नाले दिलाए रखते हैं सौ सौ आँसू रूलाए रखते हैं

कोई कसर छोड़ी नहीं, सारी गल्तियाँ करीं फिर भी
हम जैसे नाकिसों के नाजों को उठाए रखते हैं

हम तो हैं कुछ भी नहीं, लाखों में कोई एक हैं फिर क्यों
अपने दीवानगानों के लिए आँखों को बिछाए रखते हैं

सारी खोजबीन के बाद, सारी ख़ुदबीनी के बाद
तौहीद की तजल्ली को 'बेनिशां' दिल में समाए रखते हैं

आसी पुरम आसी- महान अपराध, ऐब- अवगुण, तवज्जह - कृपा, ज़ाते मुतलक- ईश्वर, खलाओं- शून्यों, मौकूफ- उचित, नाले- रुदन, नाकिसों-अयोग्यों, नाजों -इच्छाओं , दीवानगानों- भक्तों, ख़ुदबीनी- आत्म निरीक्षण, तौहीद- एक ईश्वरवाद, तजल्ली - कृपा प्रकाश

50. मुझको तेरा आस्ताना

मुझको तेरा है आस्ताना, बेहद पसन्द क़समे खुदा
मुर्शिद तेरी शाने करीमी, बरसती रहे करमे खुदा

लब पर तेरा नाम हो, जब तन से निकले मेरी जान
तू ही तू हो सामने, जब मेरी हो अदमे खुदा

हर तरफ़ तेरी खुदाई हर तरफ़ तख्लीक है
अजल से लेकर अबद तक, हर जगह हरमे खुदा

बहरे बेकरां है तू, मुहीते बेकिनार है
गुंबदे मीनाई से है, उतरा करे करमे खुदा

तू ही सबको देने वाला, मताए ग़मो राहत है तू
मब्दये फ़ैयाज़ से हो, मुशर्रफ मरमे खुदा

मआले आशिक़ी उनको मिली, अन्दोहो मुसीबत हुई दूर
जां बाजियां खेलते रहे, जो भी सब मरहमे खुदा

मुझ पर तेरी हुई इनायत, शेवा ए तस्लीम मिली
तेरे करम से हो गया, 'बेनिशां' तो मौजजने खुदा

आस्ताना- स्थान, मुर्शिद-गुरू, शाने करीमी- कृपा की शान, अदम-मृत्यु, तख्लीक- रचना, अजल से लेकर अबद- सृष्टि आदि से लेकर अन्त तक, हरम- मन्दिर, बहरे बेकरां- अथाह समुद्र, मुहीते बेकिनार- अंतहीन सागर, गुंबदे मीनाई- आकाशीय गुंबद, मताए - पूँजी ,मब्दए फैयाज़ - भंडार, मुशर्रफ- देना, अंदोह- कष्ट, जां बाजियां- जान पर बाजी, मरहम-मर्मज्ञ, शेवा ए तस्लीम-पूजा का स्वभाव, मौजजने- तरंगित

51. फज़्ल से बक्शी

फज़्ल से बक्शी ऊँची परवाज़ मेरे सपने को
उठा ले गए वहाँ, जहाँ कुछ बचा नहीं है कहने को

नफ्सो इदराक के परे, मिलवा दिया अपनी ज़ात से
अपने दायरे में ले जा, जगह दे दी मुझे रहने को

पहुँचा दिया अपने करम से, मुझे मौतदिल हाल में
अहल सब्र किया अता, दुनिया के तंज सहने को

पहले तो फ़िक्र थी, ख़ुद को बदलने की मुझे
ख़ुद ही जब गुम हो गया, है बचा क्या बदलने को

सरगर दां है सारी दुनिया, रोज़े जज़ा के लिए
राहे अकीदत में, बहुत कुछ है कर गुज़रने को

नौ ब नौ राहत फज़ा है, दौरे मसर्रत ख़ूब है
हर दिन है दिन नया, और ख़ूब सँवरने को

उससे पूरे वस्ल में, मेरी ज़िन्दगी भी इक क़ैद है
मौत है नायाब तोहफ़ा, तड़पता है 'बेनिशां' मरने को

फज़्ल- कृपा, परवाज़- उड़ान, नफ्सो इदराक- मन बुद्धि, ज़ात- स्वरूप, मौतदिल- जीवन मुक्त, अहल सब्र- उच्च धैर्य, तंज- व्यंग्य, सरगर दां- घूम रही, रोज़े जज़ा- क़यामत का दिन, राहे अकीदत- ईश्वर मार्ग, नौ ब नौ- नए नए, राहत फज़ा- आनन्द, दौरे मसर्रत- चैन का समय, वस्ल- मिलन

52. हुब्बे पीराने तरीक़त

हुब्बे पीराने तरीक़त, दिल मे डुबो ली जाएगी
वजूदे हस्ती की सिफ़त, खलाओं में तौली जाएगी

पहले तो अपना बनाया, फिर दिल अपने बस किया
एक एक करके राजे हक़ीक़त, दिल में खोली जाएगी

बड़े मियाँ यह इल्म है, कहने सुनने के परे
तौहीद की बातें बफुर्सत, सीना ब सीना बोली जाएंगी

ये वो मय है जिसे, ज़रूरत नहीं आवगीन की
तेरी मखमूर आँखों से, शराबे शौक़ पी ली जाएगी

अश्क़ ही रास्ता है पहुँचने को उसकी खल्क में
अश्कों की बारात, नमनाक आँखों में संजो ली जाएगी

मिलता नहीं मेराज उसे, जब तक न हो पाक साफ़
जाने कब कब की गिलाजत, आँसुओं से धो ली जाएगी

मुझे तो है इन्तज़ार, कब आशियाना जलेगा मेरा
सारे कायनात की बर्क़ 'बेनिशां', दिल में समो ली जाएगी

हुब्बे पीराने तरीक़त- महान गुरुओं का तरीक़ा, वजूदे हस्ती- होने का प्राकट्य, सिफ़त- लक्षण, खलाओं- शून्य, इल्म- विद्या, तौहीद-एक ईश्वरवाद, सीना ब सीना-दिल से दिल को, आवगीन- बर्तन, मखमूर-नशीली, अश्क़- आँसू , खल्क- राज्य, नमनाक- अश्रुपूर्ण, मेराज- पूर्ण मिलन, पाक- पवित्र, गिलाजत-गन्दगी, आशियाना- घोंसला

53. ग़ुलाम हूँ तेरा मैं

ग़ुलाम हूँ तेरा मैं, बस दर्जा मुरीद भी हो जाए
आ जाओ जौलागाह में, तो मेरी भी ईद भी हो जाए

हुस्न के बाज़ार में कुछ, ऐसी तिजारत भी हो जाए
ज़र ख़रीद भी हो जाए और मुस्तफीद्र भी हो जाए

कहीं भूल न जाओ तुम, सारी इल्तिजाओं को मेरी
अर्ज़ मुज्तरी पेश की, उसकी रसीद भी हो जाए

हक़ मिलता है किसे, तेरी चौखट पे देने को जान
तुझपे मरने वालों की फ़ेहरिस्त में, ये शहीद भी हो जाए

क्या कमाल की अदला बदली थी ये, क्या कमाल का था सौदा
दिल के बदले जान दी, ऐसी ख़रीद भी हो जाए

छुपा के रखे हुए हैं जो, आस्तीनों में ओ सनम
उन नायाब नज्जारों के लिए, ये चश्मदीद भी हो जाए

बहसें तो हुईं तमाम, मिस्लें भी हो गईं पेश
ख़तो किताबत बहुत हुई, अब 'बेनिशां' दीद भी हो जाए

मुरीद- शिष्य, जौलागाह- भ्रमण स्थली, मुस्तफीद्र- वाजिब, इल्तिजाओं- प्रार्थनाओं , अर्ज़ मुज्तरी- प्रकट करना व्याकुलता का, फ़ेहरिस्त - सूचि, चश्मदीद- आँखों देखी, मिस्लें- फ़ाइलें, ख़तो किताबत- लिखा पढ़ी, दीद- दर्शन

54. वो आए और चले गए

वो आए और चले गए, हम यहाँ यूँ ही खड़े रहे
सारे जहां के रंग, तेरे जुल्जलाल से भरे रहे

सकते का सा आलम था, होशो हवास हुए रफ़ा
सारी हिम्मत छोड़कर हम, वहां यूँ ही पड़े रहे

इशरते रफ्ता तो मुझसे क्यों भूलती है नहीं
बद एमाल याद करके, शर्म से यूँ ही गड़े रहे

वो क़रीब थे सामने भी थे, दीद का मुझे शौक़ भी था
मौक़ा दिया था क़िस्मत ने, पर होश मेरे उड़े रहे

ले के मुट्ठी में गुलाल, फेंका जो जानिब मेरे
रंगते बढ़ती गई और उसके रंग से हम रंगे रहे

जुदा नहीं कर पाएगी कोई चीज़ उसके कदमों से मुझे
अहले कुहन की यादों से, बाबस्ता बराबर मिले रहे

मुकामे इस्तग़ना भी था, हालत थी मौत दिल सी मेरी
जाहिरत का जोश था 'बेनिशां', होंठ फिर भी सिले रहे

जुल्जलाल- परम प्रकाशवान, सकते- हैरत, रफ़ा- ग़ायब, इशरते रफ्ता- अतीत का सुख भोग, बद एमाल- कुकर्म, दीद- दर्शन, जानिब- तरफ़, अहले कुहन- पुरानी, बाबस्ता- पूर्ण रूप से, मुकामे इस्तगना- स्थित प्रज्ञ, मौत दिल- रितंभरा, जाहिरत- प्रकट

55. चोट खाकर रही गुज़ारी

चोट खाकर रही गुज़ारी, रात सारी किस तरह
तुमको कैसे बताऊँ ये, गम आजारी किस तरह

कूचा ए यार में इधर बहुत है ज्यादा भीड़ भाड़
कब से हूँ इंतज़ार में आए, मेरी बारी किस तरह

होशो हवास सब गुम हुए, अक़्ल भी मुल्तवी हुई
बेख़ुदी में हूँ मुब्तिला, दिखाऊँ होशियारी किस तरह

नए नए वाकियातों से सामना मेरा रोज़ रोज़ है
मुक़द्दम कहानियाँ हों फिर मुझको प्यारी किस तरह

उनकी निगाहें नाज का, हुआ जो घायल रात को
बेचैन दिल को आराम नहीं, शब गुज़ारी किस तरह

जाने कैसा इम्तिहान है, मैं तो हूँ शैदा हर तरह
जूद कुश्तन को भी तैयार हूँ, दिखाऊँ वफ़ादारी किस तरह

माना मैं कमजर्फ हूँ, क़ाबिल नहीं हूं दीद के
सोगवार हूँ क्यों छुपाते 'बेनिशां' से राजदारी किस तरह

गम आजारी- विछोह कष्ट, कूचा ए यार- प्रियतम की गली, मुल्तवी- स्थगित, मुब्तिला-संलग्न , वाक़ियात- घटनाएँ , मुक़द्दम कहानियाँ - पुरानी घटनाएँ , निगाहें नाज- प्रेमिल निगाहें, जूद कुश्तन- शीघ्र मरण, कमजर्फ- अक्षम, सोगवार-दुःखी

56. चला दिया तीरे नज़र

चला दिया तीरे नज़र और आग लगाकर चले गए

रूह को उरूज किया, राहे रास्त बताकर चले गए

जाने कब से नींद में मैं, चला जा रहा था बेख़बर

सोए हुए थे हवास मेरे, उनको जगाकर चले गए

तवज्जह की आग से, मशाले फ़ुक्र को जला

ख़ुद तो सुकूं से जा बैठे, यहाँ घर जलाकर चले गए

शौके दीद को किया पैदा, दिखाकर के नई ज़मीन

दिल का साज छेड़ दिया, मुझको रुलाकर चले गए

कश्मकशों के दौर में, कुलफते राह जहाँ मिली

रज्मे खैरोशर के क़िस्से को, मुझे सुनाकर चले गए

आख़िरी जो मुक़ाम था, जहाँ सौंपना खुदी को था

जीस्त को परवाज़ दी, ख़ुद को मुझमें समाकर चले गए

देने को कुछ है नहीं, कैसे दूँ बदला करम का तेरे

जो फ़रिश्तों को न हो नसीब, 'बेनिशां' वो मय पिलाकर चले गए

उरूज- उत्थान, राहें रास्त- उचित रास्ता, हवास- होश, तवज्जह - कृपा, फुक्र - फकीरी , शौके दीद- दर्शन की चाह, कश्मकशों- संघर्ष, कुलफते राह- रास्ते का कष्ट, रज्मे खैरोशर- लड़ाई अच्छे बुरे की, मुक़ाम- स्थान, जीस्त- जीवन, परवाज़- उड़ान ,मय- शराब

57. कैसे पशेमां कर दूँ मैं

कैसे पशेमां कर दूँ मैं अगियार को, पर्दे के पीछे वो मेरा यार भी तो है
आज कुरेदूँगा गर उसके मैं ज़ख़्म, कैसे भूलूँ वो मेरा गमगुसार भी तो है

कोई पल जाता नहीं है ख़ाली, जब यादों से उसकी हुआ हूँ मैं दूर
गुलाम हूँ उसका, रखना है अदब मुझे, लेकिन उससे मुझको प्यार भी तो है

बहाना तो चाहिए मिलने का उससे, बुलाता तो है नहीं कभी भी भूल से
मिल भी लेंगे, अकीदत भी होगी पेश, रास्ते में उसकी मज़ार भी तो है

बड़ी है मुश्किल मेरा राहे रास्त आना, मैं तो गिलाजत में डूबा हुआ हूँ
मुझे मालूम है ये काम नहीं होगा, पर सनम तुम पर एतबार भी तो है

तुम तो कहते रहे चश्मदीदी, मैं तो किताबों को हूँ रहा खोजता
तुम कुछ चाहो मैं कुछ और चाहूँ, कैसे होगा हमारे बीच क़रार भी तो है

जाने कितनी नावों से तेरे साहिल, कितनी बार कई मुद्दतों से आया
दीदार का खेल नहीं होता है एक दिन में, पर दिल मेरा बेक़रार भी तो है

घड़ी भर को बस एक पल को, अपनी शक्ल को तुम मुझको दिखा दो
आ सकते नहीं लौट जहाँ गए हो तुम, पर 'बेनिशां' करता इन्तज़ार भी तो है

पशेमां- दुखी, अगियार- शत्रु, गमगुसार- गम बाँटने वाला, अकीदत- पूजा, राहे रास्त-ईश्वर की राह, गिलाजत- गंदगी, चश्मदीदी- आँखों देखी

58. रूह हुई मजरूह

रूह हुई मजरूह ताब़ हुआ महताब, यार पर है न इख़्तियार मुझे
बेसबात सा है क़िस्सा ए दर्दोअलम, बीमार करके अब न मार मुझे

जाने कब से ख़्वाबों की दुनिया में, सोता रहा हूँ हो कर बेफ़िक्र
सो न पाऊँ तेरी याद में जागूं, ऐसा कर दे तू बेदार मुझे

मेरा रूख है तरफ़े दुनिया, सोता हुआ मैं हूँ चला जा रहा
रूबरू कर दे तू मुझे अपनी तरफ़, पूरी तरह कर जानिबे यार मुझे

तेरा हूँ बन्दा, हूँ गुलाम तेरा, भरोसा है तुम पर नहीं भूलोगे मुझे
रोज़े महशर मेरा साथ दोगे, इतना ज़रूर रहता है एतबार मुझे

कब उसके कदमों की छांव मिलेगी, कब वो पकड़ेंगे हाथ मेरा
वो दिन होगा कैसा जब उसकी जानिब, बैठा रहूँगा, है इन्तज़ार मुझे

गहरा उतर गया तीरे नज़र वो, होशो हवास तो सभी उड़ गए हैं
उस एक नज़र से जो उसने देखा, जिस्मों जां और कर दिया बेक़रार मुझे

कभी तो मुझे हफ्त आसमां की ख़बर है, कभी अपने पा तले की ख़बर नहीं
सामने भी हो, क़रीब भी हो फिर भी, क्यूँ न होगा 'बेनिशां' क़रार मुझे

मजरूह- घायल, ताब़- गर्म, महताब- चाँद, इख़्तियार- काबू, बेसबात- बेकार, दर्दोअलम- विछोह दुःख, बेदार- जाग्रत, जानिब- तरफ़, हफ्त आसमां- सातों आसमां, पा-पाँव

59. दुनिया को छोड़ दर पे तेरे

दुनिया को छोड़ दर पे तेरे, आ ही पड़ा जो हो सो हो
कदमों मे तेरे अपनी रख दी जान, तेरी मर्ज़ी बता जो हो सो हो

उकता गया हूँ और कुलफते राह, न ही कभी हैं बंद होते
कश्मकशे दुनिया मेरी नन्ही जां, अपनी कमली में छुपा जो हो सो हो

वादा किया था तूने अज़ल में, समेट लोगे मुझे अपने कुर्ब में
रोज़े अव्वल से हुआ जो अलग मैं, रूह को तू मेरी उठा जो हो सो हो

सुराबों का मेला है चकमक, ज़हदे मुसलसल का है खेल चश्मक
भटकता रहा जवालों में मैं तो, कभी न जीस्त को जिया जो हो सो हो

कभी कभी तो करते मेहर हो, कल रात फिर तुम पकड़ में आये
सारी बातें बता दी तुमको कल, सब कुछ कहा सुना अब जो हो सो हो

कटता नहीं है मेरा वक़्त अपने घर, पिया तेरी नगरी ही मेरी जगह है
देख मेरी तड़प और ये मुज़्तरी, अब तू ले अपने में समा जो हो सो हो

रोज़े महशर जब हिसाब होगा, ज़रूर दे देना तुम मेरी शहादत
क़बूल हैं अपनी गलतियां, क्या करूँ, 'बेनिशां' की है ख़ता जो हो सो हो

कुलफते राह- राह के कष्ट, अजल- प्रारम्भ, कुर्ब- सामीप्य, सुराब- मरीचिका, जहदे- संघर्ष, जवाल-मृत्यु, जीस्त- जीवन, मुज्तरी- व्याकुलता

60. बड़ी ग़ज़ल

तू को कुचल दे इतना, तलबखू तेरी तू न रहे
फ़ना कर दे ज़ाते हक़ में, दुई की तेरी बू न रहे

मुतलाशी हूँ तेरा मैं, मुझको है तेरी ही तलाश
तुम में गुम हो जाऊँ मैं, माँगने को अफ़ू न रहे

जाविदां हो जाऊँ मैं, बदरजेगायत मुझे मिले सिला
खला में होकर आशकार, दिखने को चार सू न रहे

सितह आलम में तो अब, दूसरा कोई न हो
तुझको देखूँ सब ही में, बेनिशां का कोई अदू न रहे

ताअते हक़ हो जाए अता, कुलफते राह सब ख़त्म हों
सबकी ख़ुशगवारी ही देखूँ, दिखने को दिगरगू न रहे

हफ्त आसमां की तवाफ, हो जाए मेरी जौलागाह
हिजाब मेरे हो जाएँ गुम, करने को रफ़ू न रहे

आलमे बिसीत में हो कर फ़ना, खला में पैहम हो रहूँ
महब रहूँ हर वक़्त ख़्याल में, अच्छी या बुरी खू न रहे

बहरे बकरां में बसर मेरा, कश्मकशे दहर सब दूर हो
रिक्कत में धुल जाए सब, अंदर कोई दरूं न रहे

अफलाक में करके बसेरा, शम्सो कमर से आँखें लड़ें
बेगानावर कोई हो नहीं, इसलिए कोई तनक तू न रहे

बेकिनार है, कोई हद न उसकी, सब जगह मौजूद है
तेरी आफ़रीन को रखने, बाक़ी कोई सुबूं न रहे

कुल्जमे इश्क की तुगियानी, होशोहवास सब गुम हुए
न रूह रहे न जां रहे, न तन रहे लहू न रहे

दिले हजीं मिट जाए मेरी, ज़ाते हक़ मैं हो फ़ना
सब कुछ हो जाए पाक साफ़, हायली की नुमूं न रहे

शिगुफ्ता तेरी दीद में, महब में होकर बस रहूँ
हू मैं इतना गुम हो जाऊँ, कि हू की भी हू न रहे

मुझ हकीर को इतना मिला, सब अजाब भी मिट गए
न तमन्ना रहे न उम्मीद रहे, बाक़ी कोई आरज़ू न रहे

तायरे लाहूती हो जाऊँ मैं, ऊँची मेरी हो उड़ान
नज़र पहुँचे हफ्त आसमां के पार फिर कोई गर्दूं न रहे

आसमानों से उतरे फ़ैज़, आम हो और ख़ास हो
तुझसे मिल जाने के बाद, बाक़ी कोई जुनूँ न रहे

कौनेन की सब नियामतें, तूने जो कीं मुझको अता
तेरे साग़गार हो जाने के बाद, दिल कहीं रज़ू न रहे

तस्कीन मिल जाए ऐसी, दिल मुन्नवर हो रहे
हो बरसातें फ़ैज़ की, कि फिर हाजते वुज़ू न रहे

ग़ैबत का हो जाए आलम, मुस्तहकुम मज़बूत हो
ख़ाक हो जाऊँ तिफ्ल हो जाऊँ और मेरा ग़ुरूर न रहे

पुर मुसर्रती मिल जाए मुझको, तमन्नाएँ तमाम हों
आसूदा हो जाऊँ इतना कि, मुझे ख्वाहिशे सुकूं न रहे

दरीदा दिल लेकर मैं आया, रहनवर्द तेरी राह का
दीदार तेरा होने के बाद, बाक़ी कहीं गुफ्तगु न रहे

ख़ौफ़ नहीं अब मर्ग का, जां बाज़ियाँ खेला करूँ
तू ही तू हो हर जगह, दुनिया की जुस्तजू न रहे

हर नफस तेरी याद हो, हर वक़्त तेरा ज़िक्र हो
तुझे मैं पसन्द आ जाऊँ इतना और कोई मौजू न रहे

साबित क़दम हो कर रहूँ, मुतअल्लिक तेरी ज़ात से
वहदत का ही नूर हो, दीगर चीज़ें और फ़ुजूं न रहे

नैमते उज्मा की नकहत, चार सू फैलती रहे

खला की हो उड़ानें, न तेरा रूख रहे गेसू न रहे

फिदाई मुरीद मैं हो जाऊँ तेरा, तजकिया तो नफ्स हो

तेरा ही जल्वा हो चार सू, कोई मजाजी फुसूं न रहे

तुलूअ हो गया नया सूरज, अकीदा मेरा बुलन्द हो

तेरे जमाल के सामने और किसी का शोला रू न रहे

सिजदा रवां तेरी ज़ात पर, सरवरी का शौक हो

जज्बाए शहादत ग़ालिब हो, 'बेनिशां' कोई चारा ज़ू न रहे

तलबखू- जिज्ञासु, जाते हक़- ईश्वर, दुई- द्वैत, मुतलाशी- जिज्ञासु, अफ़्ऊ- क्षमा, जाविदां-अमर, बदरजेगायत- इंतहा दर्जे का, सिला- इनाम, खला-शून्य, आशकार- प्रकट, चार सू- चारों तरफ़, सितह आलम- संपूर्ण विश्व, अदू- दुश्मन, ताअते हक़- पूजा का स्वभाव, कुलफते राह- राह के कष्ट, ख़ुशगवारी- उन्नति, दिगरगू- ख़राब, हफ्त आसमां- सातों आसमान, तवाफ- परिक्रमा, जौलागाह- भ्रमण स्थली, हिजाब- पर्दे, आलमे बिसीत- अखिल विश्व, पैहम- स्थित, महब- लीन, खू- आदत, बहरे बेकरां- अथाह समुद्र, कश्मकशे दहर- जीवन संघर्ष, रिक्कत- रोना, दरूं- आग, अफलाक- आकाश, शम्सो करम-चाँद सूरज, तनत तू- बहस, बेकिनार- अथाह, आफ़रीं- बाढ़, सुबूं- घड़ा, कुल्जमे इश्क-प्रेम नदी, तुगियानी- बाढ़, दिलेहजीं- उदास दिल, हायली-रूकावट, नुमूं- वृद्धि, शिगुफ्ता- खिला हुआ, दीद- दर्शन, हकीर-तुच्छ, अजाब- कष्ट, तायरे लाहूती- शून्य पक्षी, गर्दूं- आसमान, जुनूँ- पागलपन, कौनेन- परलोक, सागगार- अनुकूल, रजू-प्रवृत, पुर मसर्रिती- पूर्ण संतोष, आसूदा- संतुष्ट, सुकूं- चैन, दरीदा- टूटा हुआ, रहनवर्द- पथिक, दीदार- दर्शन, गुफ्तगू- बहस, ख़ौफ़- डर, मर्ग-मृत्यु , जुस्तजु-इच्छा, नफस- सांस, मौजू- विषय, साबित क़दम- दृढ़, मुतअल्लिक- संबंधित, वहदत- एक ईश्वरवाद, फुजूं- कई, तुलूअ- उदय, अकीदा- विश्वास, जमाल- शान्ति, शोला रू- दहकता चेहरा, तस्कीन-शान्ति, मुनव्वर- प्रकाशित, ग़ैबत- बेख़ुदी, मुस्तहुकुम- मज़बूत, तिफ्ल- शिशु, नैमत- कृपा, चारा जू - इलाज का उपाय

Back page

मेरा जैसा कौन यहाँ साहिबे तक़दीर है

जिसकी ख़ुद नुमाई की अबस टूट गयी ज़ंजीर है

***

तेरी ज़ात में जब हो गया फ़ना, तो मुझमें चलता कौन है

तुम्हें धोखा हुआ है मैं नहीं हूँ, जाने मुझमें रहता कौन है

***

ढूँढा किया खुदा को मैं, ख़ुद की तलाश में मगर

कोई सुराग़ मिला नहीं, अफसुर्दगी मगर नहीं छोड़ी

***

पहुँच नहीं सकती, फ़रिश्तों की परछाइयाँ वहाँ

जहाँ आशियाँ है मेरा, नहीं है खुदाइयाँ वहाँ

***

जमाले मुर्शिदी का असर है, वर्ना मैं तो ख़ाक था

सरे पा तक अज़ाब था, बस एक मुश्ते राख था

***

नूरे वहदत से दिल मेरा हो, पुर मुनव्वर रोज़ रोज़

बेख़बर हर रोज़ रोज़, चश्मेतर हर रोज रोज

***

अब तो ये हो गया हाल, तेरी रहनुमाई में

सूरत देखनी हो जिसको तेरी, वो 'बेनिशां' तक पहुँचे